॥ कुंडलिया ॥ पाल्यो प्रजहिं समान सुत सुजनन को सुखदेव । दण्ड करब दुष्टन प्रबल देश कोश सुधि लेव ॥ देश कोश सुधि लेव शत्रु पै करब न दाया । धर्म धस्यो दृढ़ ताकि कस्यो सँग मित्रन माया ॥ मानि मयासिख सत्य कुपथ कबहूँ नहिं चाल्यो । भाग्यवन्त श्रुतिरीति समुझि सन्तत प्रतिपाल्यो ॥

सो० अब सुनु सखा सुजान जाहु भवन अंगदसहित ।
करेहु राजकल्यान भूल्यो जनि मम काजही ॥
मैं इत गिरिपरछाय बरषाभरि रहिहौं निकट ।
बर्ष चतुर्दशतांय पुर न जाउँ आयसु जनक ॥
सुनि सुकंठधरि चैल करि प्रणाम गंवने भवन ।
राम प्रवर्षणशैल आय बासकीन्हे हरषि ॥
राम रहनहित आय प्रथमहिं देवन गिरिगुहा ।
राखे रुचिर बनाय मनभायंक सन्तत सुखद ॥

॥ त्रोटक छन्द ॥ बन राघव आयरहे जबते । प्रद आनँदपुंज भयो तबते ॥ द्रुम भाँतिन भाँति सुफूलि फले । खगबृन्दसु बोलत बोल भले । अलिगुंजत पुंज प्रमोदपगे ॥ अवलोकि प्रभा मनमैन ठगे ॥ मुनिसिद्ध सदेव प्रसन्नहिये । खगभृंग कुरंग सुवेषकिये ॥ प्रभु सेवहिं सादर शुद्धहिये । वसुयाम श्रिराम सनेहलिये । रघुनाथ कहैं बहुभाँति कथा अनुजै नृपनीति सुभक्ति यथा ॥

दो० बरषाऋतु सुन्दर सुखद देखहु तात सुजान ।
घनघमरिड जनु यामिनी रबिपै कीन पयान ॥

कबित्त ॥ घेरे नभ संकुल घमरिड घनघोर जोर गर्जितर्जि घूमड़ि अँधेरीराति छैरही । कोपकरि यामिनी सुसाजिकै समूह सैन धाई जनु भानुपै गराजि हाँक दै रही ॥ भाग्यवन्त धारिधनु इन्द्र द्वी

तड़ितआसि बारिबुन्द बाणनकि बृष्टिजालह्वैरही। भागिगो सुभानु है सशंक पाय जैत रैन चैन सो निशंक त्यों सुसैनराज कैरही॥ आयो है मनोज साजि सैन चतुरंग संग कीन्ह्यो है निशंक जगडेरहि सचावनै। श्यामल ससेत पीत रक्तन घटाके जाल दीन्हे है बितान तानि मंजुल सुहावनै॥ चंचल चमाक तड़िताके फहरात ध्वज दुंदुभी सो देतघन गर्ज घहरावनै। भाग्यवंत गावत बिरद बंदि मोरपीक धायो है मदनकोपि बिरही सतावनै॥ घेरयो गिरि बृन्दन शतक्रंधौं सुसाजि-सैन बारिबुंद बाणझरि भूतल भरतुहै। मारै ताकि बज्रकूं डारत तड़पि गाज धावन से मोर गांव गांवन फिरतुहै॥ भाग्यवंत गावत सुयश चारु कोकिला सुमेघनकी गर्ज द्वार नौबति झरतुहै। तानि द्रुम बेलिन बितान त्यों सुजैति रिपु पाय कै अचलआपु राजही करतुहै॥ ऊदधि सकोप चढ़्यो भूपर कि साजि सैन दीन्हे करि मुद्रित न खोज महिपाइयो। नदीनद नारसो अपार परे बारिदल कीन्हे शरपंजर सुबाण बुंदछाइयो॥ बाणबसि बिज्जुनाद बीरनकी गर्जघोर मारुत झकोरजोर शोरको मचाइयो। हाहाकारहोत दिशि दशाहू न जानिजात कंपमान भूमिगहि सिंधु कैधौं लांइयो॥सवैया॥ चहुँ ओरते घोर छटाउनये घनघेरि कै दामिनि शोभसचै। झकझोरत पौन झकोरनशोर शिखंडि रहे चहुँ ओर मचै॥ पपिहा पिवपीव रटै न घटै कलकूकनि कोयल तेगगचै। बिरहीजन प्रान सतावन ज्यों ऋतु पावसकोपि चढ़्यो न बचै॥ घहरात घटा घनघोर घिरे तमतोम तमी महि ब्योम मढ़्यो। चमकै चपला चहुँ ओरनते धुनि दादुरत्यों अतिजोर बढ़्यो॥ बरषै बर बुंदनबारि बहै बरबात डरात न जातकढ़्यो। भगवंत मनो दल साजि सुलै बिरहीन पै पावस कोपि चढ़्यो॥ नवपल्लव बेलि प्रसूनलये द्रुमभारन भू-

मत शाखनये।सरितासरनार अपारभरे हरितावनि हेरत चित्तचये॥ चहुँओरते शोर मचेइ रहे गरजैं निशिद्योस घटाउनये। भगवंत अनंदित जीवसबै बरषावत ग्रीषम तापगये॥

दो० बरषाऋतु सुंदर परम सुखदायक सब चित्त।
अर्क जवासा बिरहिनिन दुखप्रद है यह नित्त॥
भयो बिगत बरषा शरद कीन्ह्यो बिश्व प्रकाश।
आयो जनु अवनिहि मिलन साजिसमाजसुखराश॥

किरीट छंद॥ सेतपुशाक समाजसजे नृप आयउ शर्दमिलै महिकारन। खंजन कोक सरोज मनोजग बाजिउठे नृपदूत अपारन॥ चंद्रक छत्र सजै शिरपावस पांवड़े नायदिये नदनारन। दैजगराज प्रणामसुकै गयो पावस कीन सुशर्द पसारन॥ सवैया॥ भूमिअकाश प्रकाशमहा मुदमंगल छायरह्यो सबठैना। चंदअमंदउदै सनक्षत्र सु चांदनिचांड खिलैभलिरैना॥ त्यों भगवंत भयो जल निर्मल पीवत जीव लहै सब चैना। डंकदिये निरशंक अकंटक राज करै नृपशर्द सुहैना॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेकिष्किन्ध्याकाण्डेसुग्रीवराजबर्षाशरदऋतुवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम तमाल सो गात विशाल भुजा बल जालसुहैना। आनन चन्द प्रभा सुखवृन्द सुआनँदकन्द लजावन मैना॥ शीलनिधान सुजान शिरोमणि पावन पुंज भरे गुणऐना। वन्दतहै भगवन्त सदा जनजानि द्रवो हरि राजिवनैना॥ छप्पै॥ बीत्यो बरषाकाल शरद निर्मलऋतु आयो। मिली न सियसुधि कतहुँ सुरति सुग्रीवभुलायो॥ पाय नारि धन राजकाज भूल्यो मम सोऊ। काल्हिहिनि देउँ पठाइ बालि थल जानहिं वोऊ॥ गहि पानि

सखा कीन्ह्यों प्रथम आनि ज्ञान स्वइ गमकरौं। तुमजाहु तात स-
मुझाय त्यहि कहौ वेगि कारजसरौ ॥

दो० प्रभुआयसु लक्ष्मण अकनि चले धारि धनुबान।
सुग्रीवहि इत जाइकै कह्यो बोलि हनुमान ॥
जासुकृपा नाशी विपति लह्यो राज धनधाम।
बिषय विवश स्वइ स्वामिको बिसरयो तुमसबकाम ॥

सो० सुनि सुग्रीव डराय कह्यो वेगि मारुतसुवन।
पठवंहु दूतबुलाय जहँतहँ खोजहिं जाइ सिय ॥

तब मारुतसुत दूत बुलाई। दीन्हें जहँतहँ विपुल पठाई ॥
रामानुज त्यहि अवसर आये। धनुचढ़ाय भय सबहिं देखाये ॥
कीन बिनय बहु बालिकुमारा। अभयबाँह दै लषण निवारा ॥
रविसुत डरे सुनत प्रभुक्रोधा। कह्यो बोलि मारुतसुत योधा ॥
तुम तारायुत जाउ तुरन्ता। करि विनती गृहलाउ अनन्ता ॥
त्यहि सँगलै हनुमन्त सिधाये। करिबहुविनय मुदित गृहलाये ॥
परे सुकंठ चरण शिररासी। जोरिपाणि अस्तुति बहुभाखी ॥
चरणपखारि दीन वर आसन। कह्यो नाथ जनहित का शासन ॥
सियसुधि लेनचही कहुँ ताता। करहु सो यत्नबनै ज्यहिबाता ॥
तब सबचरित समीरकिशोरा। कह्यो दूत जिमिगे चहुँओरा ॥
पुनि सुकंठ मनसहित उमंगा। अंगदादि वानरलै संगा ॥
रामानुजहि लीन करि आगे। आये जहँ रघुपति अनुरागे ॥

दो० कोटिमदन शोभाकदन बदन सदन सुखराम।
देखि सुगर आनँद बगर कीन्ह्यो दण्डप्रणाम ॥

पुनि करजोरि रामरुख पाई। बोल्यो मधुरवचन कपिराई ॥
तव माया अति प्रबल गोसांई। कीन्हे स्वबश सबहिं बरियाई ॥

मैं वानर पशु बिषयनिकेता। मायावश सुरनर मुनिजेता॥
ज्यहिपर कृपा नाथ तव होई। बिषय बन्धते छूटै सोई॥
सुनि रघुवीर परमप्रिय बानी। बैठाये करगहि सनमानी॥
सखाकरहु अब स्वई उपाई। सिय सुधिमिलै जाहि सुखदाई॥
यहिविधि कहत कृपासुखकन्दा। तबलगि आइगये कपिबृन्दा॥
राम चरण पंकज शिरनावहिं। प्रभुहिबिलोकिजन्मफलपावहिं॥
कपिदलप्रबल अमितनहिंलेखा। स्वइ जानै जिन नैनन देखा॥
बूझी कुशल सबहि रघुवीरा। बिश्वरूप व्यापक मति धीरा॥

॥ छप्पै ॥ तब बोले सुग्रीव सुनहु मर्कट समुदाई। करहु राम कर काज सियहि खोजहु सब जाई॥ मास दिवस के माहिं अवशि दीन्ह्यो सुधि मोही। अवधि मेटि बिनु खोज आव जो मारौं वोही॥ यहि भाँति पाय शासन हरषि जहँ तहँ चले तुरन्त सब। कपिराज कह्यो पुनि बोलि अस अंगद नल हनुमंत तब॥ सवैया॥ हेनल अंगद वायुतनै तुम ऋक्षपते सब दक्षिण जाहू। सीतहि खोज किह्यो सब ठौर मिलै मग जो जहँ पूँछेहु ताहू॥ त्यों भगवन्त सु काय गिरा मन काज किह्यो प्रभुको स उछाहू। जाहु हृदै धरि राम पदै प्रभु काजक आज तुम्हें बड़लाहू॥

दो० आयसु पाय कपीश को हर्षि नाय पद शीश।
लै सँग मर्कट भालु बहु चले सुमिरि जगदीश॥

कुंडलिया॥ नायो शिर हनुमान जब तब प्रभु निकट बुलाय। दीन्हे निजकर मुद्रिका दीन्ह्यो सीतहि जाय॥ दीन्हेयो सीतहि जाय यहै मेरी सहिदानी। आयो फिरि कपि वेगि विरद मम प्रियहि बखानी॥ खानि सुकृत सुखदानि पानि मुँदरी जब पायो। पवन तनय मन हर्षि चल्यो रामहिं शिर नायो॥

चले सुभट सब खोजत सीते। सुमिरि राम भञ्जन भवभीते॥
गये सघन बन सकल भुलाने। भये तृषित जलबिनु अकुलाने॥
तब हनुमान बिवर यक देखा। गयउ तहाँ लै कपिन अशेखा॥
त्यहि भीतर मन्दिर यक सोहा। बरणिनजाइ देखि मनमोहा॥
त्यहि महँ दीख बैठि यक नारी। तप समूह शोभा अति भारी॥
सबनजाय त्यहि शीशनवाये। पूँछ्यउ सो निजचरित सुनाये॥

दो० त्यहि तब कहा कि खाहुफल करहु पान शुचिनीर।
सुनि फलखाय सुपाय जल आये पुनि त्यहितीर॥

चतुरंसाछन्द॥ तब निजहाला। स्वइ तपबाला॥ कह्यसि बखानी। कपिन सुबानी॥ कुण्डलिया॥ हेमानामसु अप्सरा रही एक छबिवान। मयदानव त्यहि देखिकै हरिआन्यो यहि थान॥ हरिआन्यो यहि थान इन्द्रसुनि मार्‍यो ताही। यहसब विभव विलास बहुरि दीन्ह्यो विधिवाही॥ वाहीकेर निदेशकरौं यहि थलकी क्षेमा। स्वयंप्रभा मम नाम सखी जानौ म्वहिं हेमा॥

दो० मैं हौं मनुसावर्ण्य की सुता किह्यों तपवृन्द।
अब जैहौं रघुबीर जहँ कृपासिंधु सुखकन्द॥
तुम अब मूँदहु नैन निज जाहु बिवर तजि बीर।
तजहु शोच पैहौ सियहि धरहु हृदै सब धीर॥

तोटक छंद॥ दृग मूँदि बिलोकहिं फेरि जबै। कपि ठाढ़ समुद्र के तीर सबै। वह राघव पै पुनि जात भई॥ शिरनाय बिनय बहुभांति कई॥ हरिभक्ति अनूपम पाय भली। बदरीबन गै शिर नाय चली॥ इत शोचत कीश खड़े सबहीं। गत औधि न शोध मिल्यो अबहीं॥ कह अंगद तौ सब कीश सुनौ॥ मम मृत्युं भई अब भांति दुनौ॥ सुधि सीय मिली कतहूं न इतै।

कपिराज करी वध जात उतै ॥ अवलोकि दुखी अति बालितनै। कह ऋक्षपते गुनि बात मनै ॥ मोदकछंद ॥ तात गनौ जनि मानुष रामहिं। पूरणब्रह्म सदा सबठामहिं ॥ लीन सुइच्छहि ते अव तारक। गोद्विज देव धरा दुख टारक॥ त्रोटक छंद॥यहिभांति रहे कहि बंदर ते। सम्पाति सुन्यो गिरि कंदरते॥ ह्वै बाहेर कीश लख्यो जबहीं। जगदीश अहार दियो घरहीं ॥ अब भक्षण आजु करौं जितये। बहुबार अहार विना वितये॥ डरपे कपि गीध गिरा सुनिकै। तब अंगद बात कह्यो गुनिकै ॥ सवैया॥ धन्य जटायु समान नहीं कउ रामके काज जु देहहिं त्याग्यो। रावण से भट हारि हिये बल जासु विचारि क्षियै लैभाग्यो॥ जासु क्रिया निज पाणि कियो रघुनायक दिव्य सु कीरति जाग्यो। आपुगयो हरिधाम सबै छल छांड़ि जु रामहिं सों अनुराग्यो॥

अनुज कथा सुनि इमि बहुभांती। कपिन समीप चल्यो संपाती॥
करि बहु शपथ निकट सो आवा। परम प्रेम सब कहँ शिरनावा॥
जामे पक्ष तिलांजलि दीन्हा। प्रभु प्रभाव बहु बरणन कीन्हा॥
पुनि निज कथा कही सब गाई। जरे पंख ज्यहि बिधि तरुणाई॥
सीता कै सुधि बहुरि सुनाई। पैहहु धीर धरहु मनभाई॥
शत योजन यह सागर जोई। नांघै काज करै भट सोई॥
असकहि गयो जबहिं संपाती। कपिन कियो बिस्मय बहुभांती॥
निज निज बल तब सकलबखाने। पारजान हित सबहिं सकाने॥

कुण्डलिया॥ जावों पार समुद्र मैं कह अंगद सब पाहिं। फिरति बार पर होतहै कछु संशय मनमाहिं॥ कछु संशय मनमाहिं ऋक्षपति कहत हँकारी। रह्यो कहा चुप साधि पवननंदन बलभारी॥

भारी काज बिचारि शंक मनमें जनि लावो। सुमिरि रामपद कंज पार सागर तुम जावो॥

दो॰ जामवंत के बचन सुनि पवनतनय हरषाय।
तुरत हेम गिरि सों अधिक दीन्ह्यो देह बढ़ाय॥
ऋक्षपते बूझौं तुम्हें करौं कहा अबजाय।
उचित सिखावन होइ जस सो कहियो समुझाय॥

भुजंगप्रयातछंद॥ कहौ रावनै सेनसा जाय मारौं। त्रिकूटाद्रि ऊपारि सामुद्र डारौं॥ कहौ लाय वैदेहि रामै मिलावौं। करौ जो निदेशापु कै सोइ आवौं॥ कुंडलिया॥ याही तुम हनुमंत अब करौ लंक में जाय। जनकसुता को देखिकै प्रभुहिं देउ सुधिआय॥ प्रभुहिं देउ सुधिआय सुनत सजि सैन सिधैहैं। मारि असुर रण जीति जनकतनया सँग लैहैं॥ लैहैं सुख सब लोक सुयश जागिहि जगमाहीं। भाग्यवंत यश गाय सुफल जीवन सब याहीं॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे

किष्किंधाकाण्डसमाप्तम् त्रितीयोऽध्यायः ३॥



भक्तिशिरोमणि सुन्दरकाण्ड ॥

दोहा ॥

बन्दौं श्रीहनुमन्तके चरणकमल शिरनाय ।
जिनकी कृपा कटाक्षते अगमौ सुगम लखाय ॥

कुंडलिया ॥ पायो जब ऋक्षेशको आयसु पवनकुमार । कूदि चढ़्यो भूधर तमकि करि उर प्रभुहिं सँभार ॥ करि उर प्रभुहिं सँभार जबहिं कूद्यो बलवन्ता । मसकि धस्यो महि मेरु गयो शिरचोट अनन्ता ॥ चोट दल्यो उर कूर्म उछलि ऊपर जल आयो । कंपमान सब लोक बिकल दिग्गज डरपायो ॥ कीन्हें जलधि बिचार मन कपिहिं जातपथ देखि । रामचन्द्रको दूत यह ह्वैहै श्रमित बिशेखि ॥ ह्वैहै श्रमित बिशेखि कह्यो मैनाक हँकारी । जाहु उपर उतराय हुवो कीशै श्रमहारी॥हरि त्यहि तरत बिलोकि परसि पदपंकज दीन्हें।चल्यो कहत बिश्राम कहाँकारजबिनुकीन्हें॥आगे रोक्यो आयकै सुरसा बदन बढ़ाय । त्यहि आनन ह्वै निकरि कपिचल्यो आशिषापाय॥ चल्यो आशिषा पाय राहु जननी तहँरहई । क्रूरै गगनचर भोग उड़तलखि छाहैं गहई ॥ गहन चहेसि तिमि कपिहि करखि ताहू त्यहिलागे

मारि पवनसुत बीर चल्यो सुमिरत प्रभुआगे ॥ ताहिमारि मारुत सुवन गयो समुद बहिपार। तहाँ जाइ देख्यो बिपिन शोभा अति अनपार ॥ शोभाअति अनपार सुतरु फूले फलनाना। गुञ्जत मधुकरवृन्द मगन देखत हनुमाना॥ माना मनआनन्द चढ्यो भूधर भयनाहीं। जापर कृपा श्रीराम सुगम अगमौं सबताहीं॥ लङ्का रावणकी लख्यो पर्व्वततते हनुमान। अति उत्तम शोभाअमित क्यों करिकरौं बखान ॥ क्योंकरि करौंबखान परीफौजें अनगन्ती। शहर कहर की बननि कहैको कहत न बन्ती ॥ बन्ती कहत न भूति बसे रावण निरशङ्का। देखत दुःख नशाय बनी कंचनमय लङ्का॥ धारयो मशक समान तत्र रूप पवनसुत बीर। चल्यो लंकगढ़ बंकको सुमिरि राम रणधीर ॥ सुमिरि राम रणधीर चल्यो लखि लंकिनि टोक्यो। सुनत क्रुद्धि बलवन्त झपटि मुष्टिक यक ठोंक्यो॥ ठोंकत सो महिगिरी सत्यबर ब्रह्म विचारयो। जायकरौ प्रभुकाज नगर निरशंक सिधारयो॥ लंकापुर घर घर सकल ढूंढ्यो पवनकुमार। कतहुँ न देख्यो जानकी गयो रावणागार ॥ गयो रावणागार तक्यो ताको तहँ सोवत। परी न कहुँ सियदृष्टि फिरयो ब्याकुल पुनि जोवत॥ जोवत देख्यो एक भवन उत्तम अतिबंका। रामनाम अंकृत्य सुभग न्यारो सब लंका॥ पुनिलागे निज मनहिं मन हनुमत करन बिचार। जागि बिभीषण कीन तब रामनाम उच्चार ॥ रामनाम उच्चार करत कपि सज्जन जान्यों। यासों होइ न हानि करनचाहिय पहिचान्यों॥ आन्यों तब द्विजरूप कहत हरिगुण अनुरागे। सुनत बिभीषण आय हरषि पाँयन पुनि लागे ॥ पूँछे तब हनुमन्त सों सकल बिभीषण हाल। कह्योनाम निज बिपिन जिमि आये राम कृपाल ॥ आये रामकृपाल जनकतनया जिमि खोई। खोजनहित

कपिभालु बिपुल पठये प्रभु जोई ॥ जोई हम सब लंकसदन देखे सिय ढूँढ़े। सुनत मगन द्वउ प्रेम बिभीषण पुनि त्यहि पूँछे ॥ कहहु पवनसुत कबहुँ प्रभु मो कहँ जानि अनाथ। करि हैं कृपा कृपायतन दीनबन्धु रघुनाथ ॥ दीनबन्धु रघुनाथ सकल साधन में हीना। प्रीति न पंकज पायँ सतत संसृत मनलीना ॥ लीना दृढ़ बिश्वास यहै जानत सब अहहू। मिलैंसन्त भगवन्त कृपाबिनु क्यों तुम कहहू ॥ राम सुभाव सुरीति बर सुनहु सखा चितलाय। करहिं सदा निज दासपर प्रेमप्रीति अधिकाय ॥ प्रेमप्रीति अधिकाय कहाँ हम बानर नीचा। कीन्हींकृपा कृपाल सुयश दीन्हें जगबीचा ॥ बीच न राख्यो नेकु कियो आपन कपिराऊ। कहौं कहाँलगि तात सुखद जसराम सुभाऊ ॥ सवैया ॥ श्रीरघुबीर सो दीनदयाल कृपाल बियोकहुँ स्वामि सुहैना। कीनसखा कपि केत्रटभालु कुचालके रूप रहेअघऐना ॥ यों भगवन्त सुस्वामि सुभावहि जानि सनेह सो जो न भजैना। सो मतिमन्द कुभाग्य जयोजग अन्तसु क्योंहठि नर्क परैना ॥ ऐसेहि कहत श्रिरामगुण मगन प्रेम द्वउगात। कह्यो बिभीषण तब सकल जनकसुता कै बात ॥ पवनतनय कह मातुसिय देखनचाहौं बीर। कही बिभीषण युक्ति तब जान जानकी तीर ॥ मारुतसुत धरिरूप स्वइ चल्यो सुमिरि जगत्रातु। बनअशोक जहँ जानकी रहति सकल जगमातु ॥ सवैया ॥ मारुत नन्दन जायलख्यो मिथिलाधिप नन्दिनि राजत जाहीं। कीन प्रणाम मनैमन हेरि सुजात दशा कहि सो सियनाहीं ॥ शीशजटा कृशगात जपै गुणब्रात सुराघवके उरमाहीं। देखिदुखी हनुमन्तभयो दुरिजाय रह्यो तरुपल्लव छाहीं ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे सुन्दरकांडेश्रीजानकीसमीपहनुमानप्रापवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० जासु सुयश तिहुँलोकमें रह्यो ब्यापि भगवन्त।
चरणकमल बन्दनकरौं मारुतसुत हनुमन्त॥
त्यहि अवसर रावण तहाँ कीन्हें विविध बनाव।
संगलिये बहु तियनको आयो खलकुल राव॥
नानाविधि सो जानकिहिं कह्योमूढ़ समुझाय।
सामदाम अरुभेद भय बहुविधि रह्यो देखाय॥

सवैया॥ हे सुठि सुंदरि प्राणप्रिया सिय कान सुबानि करो यह मोरी। मैं बलवंत सुरासुर नाथ प्रसिद्ध न है प्रभुता ममथोरी॥ जो प्रण पूरण मोर करौ यक बार बिलोकहु त्यों मम ओरी। तौ निज रानि मदोदरि आदि सु यावत चेरि करौं सबतोरी॥

दो० सुनि रावण के बचन इमि सुमिरि हृदय भगवान।
तृणधरि ओट बिदेहजा बोली बचन प्रमान॥

छप्पैछंद॥ रे रावण कस कहसि भयो चाहत तव नाशा। करहि कि नलिनि विकास कतहुँ खद्योत प्रकाशा॥ हरि आने त्वहिं मूढ़ समय सूने प्रभुपाछे। सो फल पैहसि वेगि अधम आपन कृत आछे॥ अब जाहि इहांते उठि सपदि कहौं तोहिं समुझायकै। मम बचन बिसीले सर्प त्वहिं डसहिं न जौलगि धायकै॥

सुनत वचन रावण रिस ठानी। काढ़ि खड्ग बोला अभिमानी॥
मम अपमान करसि तैं सीता। जानि परत आयू तव बीता॥
अस कहि मूढ़ चला उठि मारन। मयतनया गहि कीन्ह निवारन॥
तब सकोप निशिचरिन बोलाई। कहेसि जानकिहि त्रासहु जाई॥

दो० मास दिवस के माहिं जो कहा न करि है कान।
तौ विशेषि मैं मारिहौं निजकर कठिन कृपान॥

यहि विधि रावण सबसन भाखी। गयो भवन सीतहिं उरराखी॥

बिबिधरूर धरि निशिचरनारी। लगीं देन सीतहि दुखभारी॥
तब त्रिजटा सबहिन समुझावा। कहि निज स्वप्न प्रसंग सुनावा॥
जो निज हित तुम चहहु सयानी। सेवहु सियहि कर्म मनबानी॥

कवित्त॥ बानर भटाकी एक आयो है अचाकी लङ्कजारि छार साकी को न त्रासतासु छाकी है। खंडित भुजाकी बीस मुंडित शिराकी देहनग्न रावणाकी बैठ पृष्ठि गर्दभाकी है॥ ऐसीगति ताकी गौन दक्षिण दिशाकी राजपायो सब वाकी भाय पूरण प्रभाकी है। जै जै सुरहांकी लोक लोकन में जागी भाग्यवंत कीर्त्तिबाँकी रामचंद्र भूमिजाकी है॥

दो० यह स्वपना मैं आपनो सबसों कहौं बिचारि।
झूंठ न सो फुर होइहै अवशिगये दिन चारि॥

छंदचामर॥ तासुबैन श्रूयथों भईं सभीत राकसी। धाय सीय पाँय धारि छाय मूहँ खाकसी॥ बार बार सीय सो निहोरि पायकै क्षमा। यत्र तत्र जातते भईं प्रणाम कैरमा॥ सीय हीय लीय तौ बिचारि शोच भारि है। मास द्योस बीतते सुरारि मोहिं मारि है॥ भाखि बोलि त्रैजटै उपाय मातु सो करै। होय भस्म देह मों बिपत्तिजाल ज्यों टरै॥ आर्त बैन सीय के सुश्रूय बोलि त्रैजटा। रामके प्रताप केन शोकसिंधु है पटा॥ पाइये न रैनि अग्नि सीय धीर को धरो। बार बार भाखियो पयान धाम सो करो॥ छंदनाराच॥ बदैसशोच जानकी भयो बिरञ्चि बामहै। मिलैन आगि हेरिये मिटै न शूल मामहै॥ परैं बिलोकि ऋक्ष व्योम जाल ये अँगारसो। न आव भूमि एकहू अभाग या हमारसो॥ शशी सदैव अग्नि ज्यों सुबीरहीन जारतो। सुजानिकै कुभागिमो न आगि आजु डारतो॥ सुनै बिनै सुदीनकी दयाल है अशोक

तैं। करै सुनाम सत्यमों हरै कलाप शोकतें॥ समान अग्नि रावरे जुजाल कीशलैनये। करौ सुआगि दै निदान भूरिदुःख में तये॥ भयो दुखी सु वायुपुत्र देखि राजपुत्रिका। दियो अँगार डारि ज्यों अशोक ते सुमुद्रिका॥ कुंडलिया॥ ताहि देखि नृपजा हरषि लीन्ह्यो धायउठाय। लागतकर सियरी चकित भई आगिकसिआय॥ भई आगि कसिआय बहुरि मुँदरी तनदेख्यो। लिख्योश्रीरामोजयति बांचि मन भ्रमित बिशेख्यो॥ भ्रमित बिशेख्यो चीन्हि समुद शोकित मनमाहीं। बारबांर हियलाय निरखि पूछत सियताहीं॥ कबित्त॥ प्रीतम पियारी प्राणहीतमादियारी ज्योति जागत तिहारी दीप दीपन में सुंदरी। धार्यो है अबालपनही ते रघुनाथ तोहिं बीछुरी सो हेत कौन कीन्हें मन तुंदरी॥ बाउरी न होसितें सुनाउरी कुशलनाथ छाउरी प्रमोद काटु शोकफांसफुंदरी। जाउँ बलि बेगि सो बताउ मोहिं भाग्यवंत आई यहि ठाउँ क्योंतु नाथ हाथ मुंदरी॥

दो० सुनि सिय बचन सुशाखते शाखामृग सुखपाय।
परम मनोहर बचन मृदु बोल्यो प्रेम बढ़ाय॥

हरिगीतिका छन्द॥ सुनु मातु पूषण वंशभूषण भूप दशरथ जानिये। सुत रामलक्ष्मण नाम तिनके तात शासन मानिये॥ आये विपिनसँग सीय काहुहि हरी खल छल ठानिकै। द्वउ फिरत खोजत बिकल सुधि कछु गृद्ध सोंपुनि जानिकै॥ आये सो पंपासरहि मिलि तहँ सखा सुग्रीवहि किये। सो दीन पट भूषण मनोहर चीन्हि भय व्याकुल हिये॥ तब जानि बरषा खाय गम अब बोलि कपि संकुल लिये। पठये सु चहुँ दिशि हेत खोजन मोहिं प्रभु मुँदरी दिये॥ यह देहु सीतहि जाय कहि कुशलात मोरि सुनावहू। लखि कुशल पुनि सिय प्राणप्रियकी बेगि फिरि तुम आ-

वहू ॥ यहि भाँति श्री रघुवीर कीरति विमल कपि वर्णन किये ।
सुनि जनकजा मन मोद संकुल प्रेम परिपूरण हिये ॥

दो० चहुँ दिशि चितै श्रि जानकी कह्यो हर्षि मन माहिं ।
ज्यहिबरण्यो यह यश अमी सोप्रगटत कसनाहिं ॥

सुनि प्रिय बचन पवनसुत बीरा । आयो चलि सीता के तीरा ॥
मर्कट रूप देखि महिजाई । बैठी फिरि बिस्मय मन छाई ॥
कपटरूप बिरचे यह कीशा । आवा छलन मोहिं दशशीशा ॥
कह कपि मैं मारुत कर पूता । हनुमंत नाम रामकर दूता ॥
लायउँ मैं मुँदरी सहिदानी । प्रभुकर केरि मानु फुरबानी ॥
कह सीता हरि गुणहिं सुनावै । तब प्रतीति मोरे मन आवै ॥

कवित्त ॥ करुणाउदार बल वैभव अपार नीति प्रीतिके अगार हार भूवभार ताके हैं । शीलसम शान्ति सुठि सुन्दर कृपायतन दास दुःखदारन बिरद वेदहाँके हैं ॥ भाग्यवन्त साहब समर्थ सो त्रिलोक जासु जागत सुयशके सुयुग युग शाके हैं । पावै गनि पार गुणगणको अपार नृप कोशलकुमार त्यों उदार वीरबाँके हैं ॥

संयुता छन्द ॥ सुनि बानियों हनुमानकी । मन सत्यमानि सु जानकी ॥ पुनि सीय तासन यों कह्यो । नरसंग बानर क्योंलह्यो ॥ हनुमन्त सर्व प्रसंगत्यों । बरण्यो भयो प्रभुसंगज्यों ॥ सुनि मानि भू भुवपुत्रिका । उरलायलीन सुमुद्रिका ॥

दो० बारबार उरलायकै पिय मुद्रिका निहारि ।
कहत बचन श्रीजानकी कमलनैन भरिबारि ॥

की है यह रवि किरण सुहाई । ममदुख दुसह हरण तमआई ॥
की शशिकला सरिस है न्यारी । आई शीतकरन म्वहिं प्यारी ॥
की यह राज्यशिरी सुखदैना । आई जाहि तजी हरि ऐना ॥

की नारायण उर सम सोहै। युत शुभअंकन श्रीमनमोहै ॥
की निश्चय पठई पियपाती। आई शीतकरन मम छाती ॥
की यह प्रतीहारिनी पियकी। आई गति बूझन ममहियकी ॥
की सिख मोहिं देनके हेता। पठई त्वहिं इत कृपानिकेता ॥

दो० यहिविधि कहि कहि प्रेमयुत पूंछति सियमृदुबैन।
कहसि कुशल किन मुद्रिके सानुज राजिवनैन ॥

पुनि कपिसन पूंछति बैदेही। जानि रामपद कमलसनेही ॥
तात कुशल प्रभु सहित सुभ्राता। कहहु बेगि सेवक सुखदाता ॥
करुणासिन्धु कृपा सुखसागर। दीनबन्धु मृदुचित नयनागर ॥
करत कबहुँ सुधि मोरि कृपालय। दीनदयाल प्रणत प्रतिपालय ॥

सवैया ॥ दीनदयाल कृपा सुखशाल सदै जनपाल सुदायक चैनन। सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन अंग प्रभा शतमैनन ॥ त्यों भगवन्त सुतात कबों कहुँ पैहहिं कानसुने सुखबैनन। ह्वैहहि शीतलगात कबों वह मूरति मंजु निहारिकै नैनन ॥ जासु सनेह सँभारि हियेकरि खण्डन सासु ससूर के बैना। आयन संग बिछोह भयो सो बियोग तजे तनु प्राण अबैना ॥ जीवत दुःख अनेकसहेरु दहे तनु पी विरहागिनि मैना। आयो कछू बनि मोसों नहीं जन जानि सुधारहिं राजिवनैना ॥

दो० सुनि सियबचन सभीरसुत सजलनयन धरिधीर।
कह्यो मातु सानुज कुशल प्रभुजनिहोहु अधीर ॥
जनरंजन भंजन विपति प्रणतपाल सुखधाम।
तव वियोग संभूत दुख दुखित रहत श्रीराम ॥
धरि धीरज सुनु मातु अब प्रभुसँदेश चितलाय।
तव वियोग मोकहँ सकल भये सुखद दुखदाय ॥

सवैया॥ जादिन ते सुनु प्राणप्रिया स्वहिं तोहिं बिछोह बिरञ्चि कियो है। तादिन ते कलहै न हमें दुख दारुणदै सुख छीनि लियो है॥ काह कहौं यह जान न कोउ कहेते घटै दुखनाहिं हियो है। प्रेम को तत्त्व त्वयामम जौन सो जानत मोमन एक प्रियो है॥

सो० सोई मन सुनु मोर रहत सदा प्रिय पास तव।
प्रेम प्रीति को डोर जानु सकल यतनेहि महँ॥
प्रभु सँदेश सुनि सीय मगन प्रेम भूली तनहि।
सुमिरसुमिर छबिहीय मोचति जललोचनकमल॥
कह हनुमंत प्रवीन मातु हृदय धीरज धरहु।
सुमिरि राम हित दीन करुणाकर भंजन बिपति॥

सवैया॥ राकसवृन्द पतंग सबै रघुनायक शायक घोर कृशानू। मातु न कीजिय शोच हृदै धरुधीर जरे खलवृन्दन जानू॥ होत लहे सुधि जो रघुबीर विलम्ब न तौ करते फुरमानू। पै अब चाहत होन उदै तम दुष्टन रामको शायकभानू॥ जो अबहीं मैं जाउँ लेवाइ बनै नहिं बात न रामरजाई। ताहित धीरधरौ कछु रोजमें आवहिंगे कपिलै द्वउभाई॥ मारि सबै खलवृन्दन को लै जैहहिं मातु तुम्हें सो लेवाई। त्यों भगवन्त तिहूँ पुर में रहि कीरति पुंज मनोहर छाई॥

दो० कह सीता सुनु सुतसकल हैंकपि तुमहिं समान।
क्यों लड़ि पैहैं पार अति यातुधान बलवान॥

पद्धरी छंद॥ तब तुरत स्वर्ण पर्वत समान। कीन्ह्यो स्वअंग हनुमत सुजान॥ विश्वास पूरि सिय मन मँझार। भइ देखि कीश बल बुधि अपार॥ हनुमंत बहुरि ह्वै लघु स्वरूप। बोले सुबैन सिय सों अनूप॥ सवैया॥ श्रीरघुबीर प्रताप बड़ो करि देखिय मातुहृदै

सु विचारै। जासु कृपातृण होइ ज्यों बज्र खगेशहि व्यालतनै गहि
मारै॥ खायतिमीर तमीपतिको गिरिहेम मसा गहि आपु उखारै।
त्यों भगवन्त कृपा प्रभुकी कछु बात न सिंधु पिपील निवारै॥

दो० राम कृपा जापर करहिं ताहि सुगम सब बात।
प्रभुप्रभाव बड़ समुझि मन शंक न कीजिय मात॥
सुनि कपिबचन बिदेहजहि भयो तोष मनमाहिं।
आशिष दीन्हीं हरषि हिय जानि रामप्रिय ताहिं॥
अजरअमर शुभ गुणसदन बलनिधान सुतहोहु।
करहिं सदा रघुबंशमणि बहुत तोहिं पर छोहु॥

छंदहरिगीतिका॥ बहुकरहिं रघुपति छोह सुनि हनुमान अति
आनँद भयो। तन पुलक निर्भर प्रेम सियपद बार बारहि शिरनयो॥
तव बिदित बिश्व अमोघ आशिष मातु सो मैं पायकै। भगवन्त
अब कृत कृत्य सब बिधि भयउँ पूरण भायकै॥

दो० अब म्वहिं लागी भूखअति देखि सुफल समुदाय।
कपिबुधिबलअवलोकिसिय कह्योखाहुफलजाय॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे सुंदरकाण्डे
श्रीहनुमानजानकीसम्वादवर्णनोनामद्विबीयोऽध्यायः २॥

सो० बन्दौं पद शिरनाय मारुतसुत हनुमन्त के।
ज्यहि सुमिरत दुख जाय भाग्यवंत संतत सुखद॥

सवैया॥ सिय आयसुपाय समीरतनै शिर सादरनाय सहर्ष
चल्यो। घननादिहु तेथिक बाग प्रिया दशकंधहि सो तहँ जाय
रल्यो॥ फलखाय उखारन लाग द्रुमै लखि रक्षकबर्जत मारिदल्यो।
कछु भागि बचे ते पुकारयनि जाय दशाननपै सुनि हालहल्यो॥
पठये भट बोलि दशानन कोपि चले सजिसेन समूह छली। गर-

ज्यो हनुमंत बिलोकिं तिन्हें करि क्रुद्ध सबै क्षणमाहिं दली ॥ ज्वइ भागि बचे अधमारे कछू दशमाथ पुकारयन्हि जायचली। भगवंत न जीतन योगहमैं वह बानरहै अति बीरबली ॥

दो० सुनि रावण करिकोप पुनि पठ्यो अक्षयकुमार।
चल्यो बीर रणधीर अति लै सँग सुभट अपार ॥

भुजङ्गप्रयात छंद ॥ बिलोक्यो जबै आवते कीश ताको। चल्यो गर्जिलै वृक्षधै बीरबांको ॥ सुकूद्यो तिन्हे मध्य यों ठानिक्रोधा। यथा मेष वृन्दानिमें सिंह योधा ॥ निपाते अक्षैशेष जे रैनिचारी। तिन्हेंलै कछू नाय भूमै पछारी ॥ कछू पाणि सों धारिकै अंगमर्दा। मिलाये कछू मारि कै मींजि गर्दा ॥ पुकारे कछूभागिकै लंकरावै। महाबीर सो कीश ना जीतिजावै ॥

सुनत पुत्र बध रावण क्रोधा। कहेसि बोलि घननादहि योधा ॥
जाहु कपिहि गहिलावहु बांधी। चल्यो सुभटपितु आयसुकांधी ॥
संग सेन बहु सुभट जुझारा। आयो जहँ वानर बरियारा ॥
लखि बजरंग विटप गहिधावा। तोरेसि रथत्यहि अवनि गिरावा ॥
पुनि सब सुभटन गहिगहिधाई। डारयसि मर्दि मसनकी नाई ॥
पुनि घननादहि भिरेउ प्रचारी। लागे लड़न सुभट द्वउभारी ॥
तब पवनज मुष्टिक यक मारी। परेउ मुर्च्छिमहि विकलसुरारी ॥
आपु चढ़यो तरु कूदि बहोरी। जागिकीन त्यहि युक्तिन थोरी ॥
जीति न जाइ पवनसुत योधा। ब्रह्मअस्त्र छांड़ेसि करिक्रोधा ॥
तब हनुमान हृदय अनुमाना। चहियकीन विधि गिराप्रमाना ॥

दो० ब्रह्मबाण लागत गिरयो दाबि सुभट बहुकीश।
नागफाँस पुनि बाँधित्यहि लायोजहँ दशशीश ॥

सवैया ॥ हे गिरिराजसुता सुनु सत्य सुजाप्रभुको जपिनाम सुभा-

यो। काटतहैं भवफंदनको नर ज्ञानमई यश वेदनगायो ॥ ताप्रभुको ह्वयदूत कहौं किमि राकसके वरबंधन आयो। ताहि न बाँधनहार कऊ प्रभु कारजलागि सो आपु बँधायो ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ देख्योकपि जाई निशिचरराई अति प्रभुताई कौनकहै।करपुट सुरसारे रहत निहारे मुखरुख भारे डरनिरहै ॥ गिरि सरिस विशाला तनु दशभाला लोचनलाला क्रोधभरे। देखत प्रभुताई त्यहि बहुताई कपि नहिंराई शंकधरे ॥ कुंडलिया ॥ तब रावण कपितन चितै बोला बिहँसि कठोर। रेबानर कहुकौन तैं क्योंमारे सुतमोर ॥ क्यों मारे सुतमोर वाटिका जाय उजारे। रक्षक रक्षाहेत तिन्हैं वर्जत संहारे॥ संहारे बहु रजनिचर डारे डर ममतैं बितै। कहु कहु काकेबल निडर कह रावण कपितन चितै॥ सुनुरावण परिहरि कपट मैंहौं ताकोदूत। जो सृजि पालत हरत जग जाकोबल अनकूत ॥ जाकोबल अनकूत अवध नृप सुवन सलोने। राम लषण शुभनाम भये असि अहै न होने॥ हने असुर चौदह सहस खर दूषण त्रिशिरा सुभट। त्यहि प्रभुको मैं दूतहौं सुनुरावण परिहरि कपट॥ खायोंफल म्वहिंलागि जब सुनुरावण अतिभूख। कपि सुभाव चंचल सदा ताहिते तोरयउँरूख॥ ताहितें तोरयउँ रूख हमैं मारा ज्यहिं वोहीं। मारेउँ मैं त्यहिलागि सुवन बाँध्यउ तब मोहीं ॥ मोहिं न सो कछुलाज काज प्रभु चहौं बनायो। परिहरु प्रभुसों बैर मानु यह मोर सिखायो ॥ क्यहि कारण आये इहाँ खोजन हित सिय चोर। सीयकौन कन्याजनक जाको यश नहिं थोर॥ जाको यश नहिं थोर स्वयम्बर में ज्यहिं बीचा। रह्यो तुमहुँ अरु बाण भयोतहँवाँ शिरनीचा॥ नीच न सुधि श्रुति नासिका काटि ष्वसा तव किय रिहा। तासु नारिचोरै लखै यहि कारण आये इहाँ॥ कोहै पठवा तोहिं इत बालिबन्धु सुग्रीव।

बालि कौन बतलाउरे सोई कपि बलसीव ॥ सोई कपि बलसीव मासषट जाकी काँखे। रहेसुरति करुतासु बहुरि पौरुष निज भाखे॥ भाखे कटुजनि मूढ़ खोलि बीसौदृग जोहै। ज्यहि मार्यो शरएक बालिशठ तुच्छतु कोहै॥ ताते तजि अभिमान सब सुनुरावण सिख मोर। कृपासिंधु रघुनाथसों बैर न करि भलतोर॥ बैर न करिभल तोर देहिलै सीतहिं जाई। मरसि न ज्यहि बिनमौत चहसि जो कुशल भलाई॥ चाहसि कुशल जो आपु होय कुलखीस न जाते। गहसि रामपद जाय मानि मम शिक्षहिं ताते॥ सवैया॥ कोम्वहिं मारनहार हवै तब कर्महिं को तिनसों फिरि राखे। श्रीरघुबीर कृपा करकी शरणागत तैं मुखसों जब भाखै॥ मों शरणाजु त्रिलोक नवों क्यहि जाय न जाय जुतौफल चाखे। श्रीरघुबीरके कोपकिये खल तू न बचे पुनि यतन लाखै॥ रेकपि पोच डरै नहिं काहि हमें कहु तैं खल तुच्छ कहाहै। आयसु दीन न श्रीरघुराज न तौ करत्यों जस ख्याल चहाहै॥ तोहिं ससेन पछारि अबै डरत्यों गढ़लंक समुद्र महां है। त्यों भगवन्त फलांकमें एक सुलैसिय जात्यउँ राम जहां है॥ पै अब रावण मोर सिखावन तैं करुकान चहै भल ज्ञोरे। सेवक जासु सुरासुर सव्वे किये भल बैर न है त्यहि सोरे॥ सो कहि मानु सबेर अबै लय सीतहि पायँपरो कर जोरे। त्यों भगवन्त गये शरणैं क्षमिहैं अपराध सबै प्रभु तोरे॥ धरि रामके पंकज पाँय हृदै निज लंक अशंक है राजकरै। शशि सो यश दिव्य पुलस्त्य जगै त्यहि वंश न होसि कलंक खरै॥ करिकान सिखावन रावण मों लै सादर सीतहि पायँ परै। जनि रामके रोष दवानलमें युत बंश पतंग सो धायमरै॥ राम सों बैर कियो हठिकै जिन देखु बिचारि न ते सुख लूटे। एकन बीर करोरनके रण रोरपरे गढ़ मानके टूटे॥ तो सम

बीर बली खरदूषण तेउ न भागिबचे शर छूटे। सूझिन तोहिं पस्यो अबहीं दशकंधर तौ द्दग बीसहु फूटे॥ कबित्त॥ रोपुरे न रारि को खरारि सों सुरारि मूढ़ धारु बैनकानमो निकारु बात मानकी। जासु भृत्य संतत अजादि देव सेव पायँ कीरति कलाप जस्य चारु वेद गानकी॥ रक्षक त्रिलोक प्रतिपक्षक बिध्वंसकार हार भूवभार है न ऊपमा समानकी। भाग्यवन्त मानि सो बिहायकै कुबेर सर्व सौंपुजाय रामको प्रणामकै श्रिजानकी॥

दो० यद्यपिकह्यो कपिहितबचन बहुबिधिताहिबुझाय।
सो किमि मानै काल बश बोला बचन रिसाय॥

॥ तोटकछंद॥ कपि ढीठ महा यह काहबकै। गहि मारहु बेगि न जायसकै॥ सुनि मारण निशिचर धाय सबै। युत मन्त्रि बिभीषण आय तबै॥ कर जोरि कह्यो यह नीति कही। नहिं मारन दूतहि नाथ चही॥ करियो कछु दंड जु और चहौं। दलि बुन्द समुद्र घटै न कहौं॥ कह रावण तौ यहि पूँछ दही। पठवो ज्यहि जाय सु स्वामि कही॥ सुनते तपसी द्वउ आवहिंगे। कपिसेनस तौ सब खावहिंगे॥ तजि एक जु आनि मिलै बहुतै। तजि दीजिय एकहि तौ तुरतै॥ सबहीने कह्यो भल मंत्र यही। हरष्यो कपिशार्द सहाय सही॥ नाराच छंद॥ तबै सुरैनिचार वृन्द यत्र तत्र धायऊ। सघृत्त तेल तूल बस्त्र जाल ढोय लायऊ॥ सु बोरि बोरि ताहि सो लपेटि लूमको लियो। रुयलार पौनपूत त्यों बढ़ाय पूँछको दियो॥ रहा न तेल घृत्त बस्त्र लंकलूम नाघटी। दियो बहोरि बाँधि खैंचि पुष्ट सूत सों बटी॥ सवैया॥ देखन काज्य कौतुक त्योंतहँ आवत भे सगरे पुरवासी। दै दय गारिन तारिन बालक मारहिं लातकरैं बहु हाँसी॥ बाजहिं ढोल कलोलभरे सब निशिचरवृन्द उपद्रवराशी।

चारिहु ओर फिराय पुरै पुनि आनिकै बालधि अग्नि प्रकाशी॥ तोमरछंद॥ जब वर्त पावक दीश। लघुरूप ह्वै तब कीश॥ रिपु भौन ऊपर जाय। चहुँ ओर पुच्छ भँवाय॥

गीतिकाछंद॥ चहुँओर पुच्छ भँवाय गर्ज्जत बाढ़ि नभ सों लगिगयो। इत उत अटारिन कूदि ठौरहिं ठौरपर पावकदयो॥ अवलोकि पावक प्रबल घर घर खलन परिगै खलभली। त्यहिसमय श्रीरघुबीर प्रेरित मरुत उंचासहु चली॥

व्यान उद्यान समान अपाना। शरद तेज पाण्डव निरबाना॥
सरप सरोष शोष फरमाना। मोषन जन माधव खौमाना॥
क्षिति संताप कुवर्षण कर्मा। लम्पट लोभ तोष धुहधर्मा॥
तामोत्कर्ष चैल शयचाना। सन्निपात अरु विग्रह दाना॥
धातु धूरि धोषन अरुछोहा। दमनद रोचन तामसरोहा॥
किंकर तिवन धनञ्जय लाना। अरु उद्वेग चिंचिसा पाना॥
यइ उञ्चास पवन के नामा। मोहिं जो मिले धरे सो यामा॥
दो० प्रबल पवन झक झोरते चहुँदिशि बाढ़ी आगि।
तजि तजि निज निज भवन सब चले निशाचर भागि॥

कबित्त॥ रावणके भौन उच्च कंचन कँगूर चढ़ि ठाढ़ो कपि कौतुकी कराल क्रुद्ध भाखऊ। भारी भयदायक लगाये लूम व्योम लगि वेष बिकराल देखि धीर्य्य को न डाखऊ॥ भाग्यवंत बीर रणधीर त्यों समीरसुत गाज्यो करि कोप जबै हाहाकार पाखऊ। भागे भरे भीत कहैं निश्चरन कीश यह लीलिबे को लङ्काल रसना पसाखऊ॥ पावक प्रचण्डज्वाल उठी ओर चारिहूते कञ्चन कँगूर भू गिरनलागे जरि जरि। पखो हाहाकारना सँभार कोऊ काहूकार जरे बाल बालकी अनेक रहे मरि मरि॥ टेरैं एक एकन उठावे

जनि सौजपरो भागो भागो प्रान लैलै यारो धीर धरिधरि । देखि यह हाल है बिहाल दशभाल कह्यो मेघन बोलाय बारि नावोजाय भरि भरि ॥ पायकै निदेश दशभाल को सुवृन्द वृन्द प्रलय पयोद चले बारि बहु भरते । चारोंओर घेरि लागे बरषै मुशलधार प्रगटी कृशानु त्यों अधिक बारि परतै ॥ लागे सब जरन पराने घन हारि हीय आये लंकनाथ पै पुकार द्वार करते । भाग्यवंत महाराज बूझिबेको कौन कहै जीवन सों जागी आगि राखो हमें जरते ॥ सवैया ॥ द्वादश भानु कला भगवन्त बिलोकि न तेज तहां अस चीन्हे । कालप्रलय कि कृशानु लखे असि तीक्षण ताति नहै स्वउ लीन्हे ॥ दीख बिषाग्नि जु शेषमुखे घृत होत न पै कहुँ बारि के दीन्हे । काहकहैं हम वायुतनै अति अद्भुत मै यह कौतुक कीन्हे ॥

दो० सुनि बोल्यो मंत्री चतुर अग्नि न असि बरियार ।
ईश बामता केर प्रभु है यह सकल बिकार ॥

छप्पै ॥ पावक पानी पौन भानु हिमि भानु समेते । इन्द्र बरुण यम काल धनद लोकन पति जेते ॥ ममडर डामाडोल शम्भु अरचावन आवैं । सडर विष्णु विधि बस्यलोक तीनिहु म्वहिं ध्यावैं ॥ मम राज आज तिहुँलोक में करौं रुचै मन जौनहै । पर उजुर न करता कोउ कहुँ ईश बाम वह कौनहै ॥ पद्धरी छंद ॥ वह ईशबाम स्वइ राम होय । ज्यहिबाम धाम लायो सु गोय ॥ ज्यहि क्रोध पावक प्रबल जानि । बिरहाग्नि श्वास सि१ बायु मानि ॥ हय बामता कपिरूप तासु । निरशंक लंक जार्‍यो सो आसु ॥

दो० सुनि रावण करिकोप तब सबसन कह्यो बुझाय ।
धाय धरो कपि कहँ सुभट भागि न पावै जाय ॥

कबित्त ॥ लै लै सेल शूल पाशु परिघ प्रचंड दंड धाये बहुबीर

धीर कैके हाहाकारहे । देख्यो तिन्हें आवत सकोप कपि कूद्यो तत्र गाज्यो घनघोर ज्यों कठोरकै चिकारहे ॥ लाग्यो एकओर सों संहारन सुभट वृन्द भाग्यवंत कहै कौन गति सो अपारहे ॥ यातुधान धारि भूरि क्षणमें सँहारि धूरिदीन्ही मेलि केलिकपि केशरी कुमारहे॥

दो० सौज समिध मखकुंड पुर निशिचर यव तिल धान ।
श्रुव लँगूल स्वाहा शवद हुने हाँकि हनुमान ॥
यह दुर्दशा निहारिकै रावण रानी रोय ।
पटकि पटकिकरउर बचन कहतकीशदिशिजोय ॥

कवित्त ॥ केतहूउपाय करि हारीहों सिखाय पर प्रविश्यो न ज्ञान नेकु याके मान बाढ़ा में । हार्‌यऊ बिभीषण बुझायपै सुभाग्यवन्त कीन्हीं सो न कान मतिपागी गर्व गाढ़ा में ॥ पाइहै सो फल आपु कीन्हो अब भाँति भली बाचिहै न भागि लोक तिहूँ राम राढ़ामें । बार बार रोइयों मदोदरी पुकारि कहै देत क्यों न लाय कपि लूम याके दाढ़ामें ॥ सवैया ॥ मैं बहु भाँति बुझायथकी यक बात न पै मम कान कर्‌यो है । लीनदई हरि बुद्धि सबै प्रभु सों ज्यहि नाहक जाय अर्‌यो है ॥ काल कराल गह्यो पिय चाहत ताहिते योंहठआनि धर्‌योहै।आपनेहाथ लगाइकैं आगि कुभागि सबै अबजात जर्‌योहै॥

दो० कुम्भकरण की भामिनी बिनवत जोरेहाथ ॥
जरत बृहदते राखिये मेरोपति रघुनाथ ॥
भवन बिभीषणकेर अरु कुम्भकरणकर द्वार ।
बच्यो और गढ़लंक सब जार्‌यो पवनकुमार ॥

छप्पै ॥ जारि लंकगढ़ बंक सिंधुमें लूम बुतायो । धरिलघुरूप बहोरि जहाँ सीता तहँ आयो ॥ करिप्रणाम करजोरि कह्यो जननी करि नेहू । दीन्ह्यो प्रभु जिमि मोहिं चिह्न तैसो कछुदेहू ॥ हनुमान

बचन सुनि जानकी चूड़ामणि दिय काढ़िकै। भगवन्त कहत पुनि मातुसिय कमलनैन जल बाढ़िकै॥ सवैया॥ करि तात प्रणाम कह्यो प्रभुसों सब भाँतिन पूरणकाम अहौ। हित दीनसँभारि सु बीरदको ममनाथ कुसंकट वेगिदहौ॥ सुतशक्र कथा सुसुनायकह्यो समुझा-यहु बाण प्रताप महौ। दिन मासमें नाथ न आवहिं जो पुनि पावहिंगे नहिं जीवत हौं॥ तात चहौ तुमहूं अब जान सुराखहुँ प्रान कहौ क्यहि भांती। नाथ बियोग भयो जबते तबते कलहै न सदा कल-पाती॥ त्यों भगवंत बिलोकि तुम्हैं हनुमंत भई कछु शीतलछाती। सोउ न बात रही म्वहिंतात सु ह्वैहहि जात स्वई दिनराती॥

॥ दो० मणिबिनुब्याकुल भुजग जिमि बन बिनुझखबेचैन।
तिमि देखे भगवंत बिनु तलफत हौं दिनरैन॥
सुनि सिय बचन समीर सुत बहु प्रकार समुझाय।
चल्यउ गर्जि श्रीरामपहँ चरण कमल शिरनाय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवमीत्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेसुन्दर-काण्डेलंकादहनवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

॥ दो० शर जडकर रचि सदनवर जो कृत तामें बास।
भाग्यवंत प्रणमामि स्वइ करौ पूर मम आस॥
कूदि सिंधु आयो सपदि पवनतनय यहिपार।
मिल्यो कपिनसुनि हाल सब हरषे हृदय अपार॥

पुनिसब कपिन सहित हनुमंता। चल्यउ जहां राजत भगवंता॥
बरणत सीयचरित सचुपाये। आय सकल मधुबन फलखाये॥
सहित कीशपति पुनिसबकीशा। आये जहँ रघुपति जगदीशा॥
फटिक शिला सुंदर सुखदाई। अनुज सहित राजत रघुराई॥
जाय सबहि चरणन शिरनाये। पूछि कुशल प्रभु ढिग बैठाये॥

जामवंत सब प्रभुहि सुनाये । सियसुधिपवनतनयजिमिलाये॥
सुनि मन मुदित बहुरि भगवाना । हृदय लाय लीन्हें हनुमाना ॥
परम प्रीति समीप बैठाई । बोले मधुर वचन सुरसांई ॥
दो० कहहु तात क्यहि भांतितुम लायहु सियसुधिजाय ।
सुनिबोल्यो हनुमंत तब चरण कमल शिरनाय ॥
सुनहु नाथ भंजन भव त्रासन । तुम्हरी कृपा सुलभ सबदासन ॥
प्रभु आयसु कृत खोज सिधायन । चलतचलत सागर यकपायन॥
शतयोजन ताकर विस्तारा । प्रभु प्रतापसो ह्वैकरि पारा ॥
तहँ त्रिकूट गिरि ऊपर लंका । हरि मय बसत दुर्ग अतिबंका ॥
तहँ नृप रावण रहै अशंका । जासु कोप त्रिभुवन उरशंका ॥
त्यहि अशोक उपवन में सीता । रहति गहे प्रभु नाम पुनीता ॥
जाय चरण पंकज शिरनायों । दै मुँदरी कहि कुशल सुनायों ॥
मनभावत आशिष बर पाई । पैठेउँ बाग रजायसु पाई ॥
बन बिभंजि हति अक्षय कुमारा । तव प्रताप लंकापुर जारा ॥
बहुरि आइ सियपद शिरनायों । लै चूड़ामणि सपदि सिधायों ॥
सो प्रभु लेहु हरषि भगवंता । लीनलाय उर कृपा अनंता ॥
दो० कह हनुमंत कृपायतन सुनिये परम प्रवीन ।
युगल नैन भरिवारि सिय बचनकहे कछुदीन ॥

सवैया ॥ सानुजपाथँ गह्यो प्रभुके सुकह्यो यह मोर सँदेश सुभागी । हौ प्रभु दीनदयाल सदै प्रणतारति भंजन कीरति जागी ॥ त्यों भगवन्त सुकाय गिरामन राउरके पदहीं अनुरागी । कौनसो चूक परी म्वहिसों ज्यहिकारण नाथ इतै अबत्यागी ॥ अवगुण एकमया में जानत प्राणतजे न तजे हरिजावत । लागसो नैननको हठिहोत जे बाधक प्राणचलैचहैं तावत ॥ पौन उसास शरीर रुई बिरहागिनि

तौ क्षणमाहिं जरावत । त्यों भगवन्त सुहित्तहितै जलनैन सवैं न जरै तनुपावत ॥ जाभुजसों सहसेन सुबाहु निकन्दनकै शिवचाप चढ़ायो । जाभुजसों खर दूषण शीर्ष त्रिमारि अभय मुनिवृन्द बसायो ॥ जाभुजसों बधि वालिबली शुभकंठहि रंकते राउबनायो । वैभुज काहभये भगवन्तजु आजुलौं नाथ हमें बिसरायो ॥ कुण्डलिया ॥ सीताके अति बिपति प्रभु क्यहिविधि कहौं बुझाय । पल पल बीतत कल्पसम तव वियोग रघुराय ॥ तव बियोग रघुराय साजिदल संपदि सिधावो । मारि असुरयुत वंश समर रजमाहिं मिलावो ॥ लावो बिलँब न नेकु समुझि निज बिरदपुनीता । चलिय वेगि रिपुजीति नाथलैआइय सीता ॥

दो० मुनि सियको दुखहरन दुख रामकृपा सुखऐन ।
सजलनैन धरि धीर तब बोले गद्गद बैन ॥

त्रोटक छन्द ॥ मनकायगिरा गति मोरिज्यही । सपन्यौ दुखचाहि कि तात्तत्यही ॥ सुनियो प्रभुहै दुखभार त्यही । तजि आपुहुवैगति आनज्यही ॥ क्यहि लागिकरौ प्रभु शोचहियै । रिपुजीति लयाउब बेगिसियै ॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ कहौ लंकनाथै ससेना सँहारौं । कहौ लायकै ताहि तौ पायँडारौं ॥ कहौ लंकऊपारि सामुद्रबोरौं । कहौ कूटत्रै कुम्भ काचेसो फोरौं ॥ कहौ अद्रिलै भूरि सामुद्रपाटौं । कहौ पानके वारि यों मार्गठाटौं ॥ कहौ अंगको देउँ कै सेतुआपै । तरै सेनसारी पलैमाहिं जापै ॥ कहौ लै तुम्हें जाय सीतै देखावौं । कहौ सीयकोलाय आपै मिलावौं ॥

दो० तव प्रताप रघुबंशमणि करौं जो आयसु होय ।
तुच्छ शत्रु यहिलागि प्रभु करिय न संशयकोय ॥
सुनिबोले रघुवंशमणि ऐसे बल सुत तोर ।

त्वहिं समान तिहुँलोकमें हितू न दूजो मोर॥
प्रति उपकार न योग तव देख्यों करि अनुमान।
ताते सन्ततहौं ऋणी मैं तेरो हनुमान॥
सुनि रघुवीर वचन अनमोला। सकुचि वायुसुत पुनिअसबोला॥
सवैया॥ सोइबड़ो सबभाँति प्रभो प्रभुता ज्यहि आपुदियो रघुनायक। नीच निषाद विषादभरो उरलायकियो प्रभुसो सुखदायक॥
ताहि अगम्य सुकाज कहा रघुराज अहौ ज्यहि आपु सहायक।
त्यों भगवन्त प्रताप त्वया सब मैं मृगशाखकहौं क्यहि लायक॥
असकहि पर्यो चरण शिरनाई। प्रभु उठाय लीन्हे उरलाई॥
निकट राखि बहुविधि सनमानी। कपिपति बोलि कह्योप्रभु बानी॥
लैकपि भालु कटक बिधिनाना। करहुबेगि गढ़लंक पयाना॥
सुनि कपीश साजी कटकाई। कहिनजाय यूथप बिपुलाई॥
असी शंख मुनि शत भटमाथा। वानर गव गवाक्षके साथा॥
सात पद्म अरु असीकरोरा। दुर्द्धर गजसँग कपि भटघोरा॥
साठि सहस शत तेइसलाखा। सँग बलवीरलिये मृगशाखा॥
छप्पनकोटि शिखण्डी संगा। लै कपिचला युद्ध मनरंगा॥
पद्मचारि सत्तासी लच्छा। लै सँगकीश कुमुद भटगच्छा॥
षोड़श खर्व प्लवंग बलशीला। चला संगलै गर्जत नीला॥
गेरह अर्ब कीश बलवाना। गन्धमदन लै कीनपयाना॥
कोटि सतासी नब्बेलाखा। ताराबखत लिये मृगशाखा॥
छबिससहस नवलख दशकोरी। लय केशरी चला रिपुओरी॥
द्वादशकोटि सहसशत बाँदर। बाणवसन्त लिये सँग सादर॥
पद्म आठ नौसै इक्यासी। रतिमुख लिये कीशबलरासी॥
पद्म एक शंतलाख सुहाये। मुद मयन्दलै कीश सिधाये॥

लाख पचीस कीश यक कोरी। लै सँगचला द्विविद सुखवोरी॥
सात पद्म बसु अर्ब प्रमाना। लै कपिकीन्ह्यो पनस पयाना॥
दो० जामवन्त के साथमें भालुनको दल जौन।
सो किमि बरणौं पार मैं जानहिं देखे तौन॥
यहिविधि यूथप बहुतहैं कहँलगि कहौं बखानि।
रामचन्द्रके काजहित बटुरे तहँ सब आनि॥

छप्पै॥ प्रभु आयसु तव पाय भालु कपिकटक सिधायो। गरजत घोर कठोर शब्द तिहुँपुरमें छायो॥ यूथयूथ बलवन्त अन्तकहि काहुन पायो। कम्पित अहि महि व्योम शेष दिग्गज सकुचायो॥ श्रीराम कटक को बिभव बड़ जानहिं जिन देखयलियो। यहिभाँति जाय बिसयेंदिवस समुदतीर डेराकियो॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेसुन्दरकाण्डेश्रीरामचन्द्रसेनासहितसमुद्रतीरप्राप्तवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० स्वामी तुमसों नहिं छपी भीतर बाहर नेक।
यहय समुझि निरबाहिये प्रणतपाल तव टेक॥

सवैया॥ कोउ स्वरूपकरै अनरूप कऊ गुणगाय हिये सुखपावै। कोउरह्यो रटिनाम नितै अभिराम कऊ पद सेवन लावै॥ कोउकहै हरि व्यापक ब्रह्म अनादि कऊ हरि एक बतावै। त्यों भगवन्त प्रतीत जिन्हें ज्यहिमाहिं तिन्हैं प्रभु हैं त्यहिठांवै॥ श्रीहनुमान महा बलवान सुकूदि जे बारिधि एक फलंका। बागउजारि निशाचरमारि कै आयउ जारि महा गढ़लङ्का॥ ता दिनते दिन राति हिये सब राकस वृन्द रहैं सहशङ्का। आजहु गर्भ स्रवैं तिय दृष्टन कै सुधि श्रीहनुमान कि हङ्का॥

दो० सदृरंसकल निज निज भवन मन असकरैं बिचार।

नहिं निशिचरकुलकेर अब है क्यहुँ भांति उबार ॥
जाके चरचर केर अति बल नहिं बरणों जात।
त्यहि प्रभुके आये नगर कहौ कवन कुशलात ॥

हरिगीतिकाछंद ॥ कपि भालुदल लै राम लछिमन आय सागर तटपरे। यह पाय सुधि मंदोदरी उर कम्पअति शोचहिधरे ॥ करजोरि सादर बार बारहिं पाँय गहि कह रावणै। तजि कोहकरि अति छोह पिय उर धरहु मास सिखावनै ॥ सवैया ॥ नाथ बिरोध तजौ प्रभुसों हित आपन जानि मयासिखही तें। श्रीरघुबीर परात्पर ब्रह्मगनौ करि छोट तिन्हें नहिं जीतै ॥ त्यों भगवन्त सुजानि भलो पिय देहुपठाय श्रिरामहिं सीतै। नाहिं तो जो खरदूषण बालि कि भैगति चाहत तौ शिर बीतै ॥ तामरसछंद ॥ सुनि प्रियकै इति उत्तम शिक्षा। बिहँसि कह्यो कह बानर ऋक्षा ॥ त्रिभुवनवीरनहै मम आगे। डरपति है प्रिय तू क्यहि लागे ॥ नर कपि भालु अहार हमारे। हम मरि हैं तिनके किमिमारे ॥ तोमरछंद ॥ यहिभांति ताहि सिखाय। बैठ्यो सभामहँ जाय ॥ तबलौं कह्यो कउ बैन। कपि भालु लै प्रभुसैन ॥ तट सिंधु डेरहिं कीन। सुनि बोलि मंत्रिन्ह लीन ॥ कहियो मतो चित कौन। सबही कह्यो रहौ मौन ॥ छंदत्रिभंगी ॥ घटश्रुति अभिमानी तब कहबानी भट हमसानी कौनजना। जो सौंह हमारी सकै निहारी नर बनचारी कौन गना ॥ छल निरत सदाया कह अतिकाया जो करिदाया हुक्मलहौं। अबहीं क्षिति सारी बिनु नरहारी करउँ पुकारी सत्यकहौं ॥ सुनिकै करिवादा बद घननादा ममयश जादा जगत जहां। बिधि हरि हर सारे सुभट जुझारे बिबश हमारे नृकपि कहां ॥ तब बोले कुंभा असुर निकुंभा रतछल दंभा कलुपलदे। बल बिदित हमारी सुरन पछारी शंकन

धारो मनुपथदे॥ यहिविधि वल आपन सबरत पापन करत प्रला-
पन बिपुल भये। तबकरि पुटहस्ता कह्यो प्रहस्ता सुखप्रद रस्ता
सुनहु चये॥ सिय देहुपठाई जो तियपाई सहित सहाई फिरिजाहीं।
तौ तौ भलिबाता नतु हठिघाता करिय प्रभाता रणमाहीं॥ सुनि
सिखसु त्वदाई निशिचरराई कह्यो रिसाई बशमानै। कादर सी बातें
करत कहातें ममबल बातें नहिं जानै॥

दो० नीति कहत हम आपुपै ठहरे कादर माहँ।
तौ तुम जाना सोइहौ भली भांति सुखछाहँ॥
कह्यो बिभीषण जोरिकर नाथ सुनो मतमोर।
रामहिं सौंपहु जानकी सबप्रकार भलतोर॥

सवैया॥ रामहिं मानुष तातगनौ जनि पूरणब्रह्म चराचरनायक।
गो द्विज देव सुसंत हितै अवतार धर्योमहिभार नशायक॥ दुर्लभ
जो मुनियोगिन को शिव मानसहंस सदा सुखदायक। सो भग-
वंत कृपाकर सो तजि बैर भजौ भजिबे प्रभुलायक॥ कवित्त॥
नाथ करि दूरि रघुनाथ सों बिरोधभूरि नाइयो सुमाथ जो कुशल
चाहौ प्रानकी। त्यागिहैं न पायकै शरण्य सो सुभायरीति प्रीतिकै
सुभायबातें मानुमो प्रमानकी॥ जासुनाम ताप त्रै बिनाशक प्र-
सिद्ध गाथ नाथसो प्रकट चारिवेद जाहि गानकी। भाग्यवंतनाथ
सो समुझि बिश्वनाथ वेगिसौंपियो सुजाय रघुनाथै नाथजानकी॥
सवैया॥ हित कीनचहौ निज नाथ भजौ रघुनाथ तजौ दुचिता
चितकी। चितकी गति जानत मानत स्वै उर आनतहैं न उतै इत
की॥ इतकी न महासुखता सुखकै हरि आसु न खो बिभुता नितकी।
नित कीन चहौ सुखनाथ भजौ भगवंत सुबात कहौं हितकी॥
बलकैं घननादसे बीर जिते रण सम्मुख एकन जूटहिंगे। रजनी-

चरबृन्द गुमानभरे हनुमान सबैगहि कूटहिंगे ॥ बखशीश महेशके येदशशीश जुतो खग जम्बुक लूटहिंगे। धरि है धृति कौन कराल जबै रघुवीरके शायक छूटहिंगे ॥ चहुँ ओरते बानर भालुजबै प्रभु आयसु लंकमें धेपिलिहैं। भटमारत बैठिय गाल जिते न उलूक सो खोज किये मिलिहैं॥ भगवंत उदै रबिराम भये न दशास्य कुमो- दिनि तौ खिलिहैं। धरि है धृतिको करिकोप जबै रघुनायक बाण निजे ढिलिहैं॥ नल नील न सेतु रचैं जबलौं जल राशि न राघव पारतरौ। सुत बालि न लंकदहै जबलौं. न प्रभंजनजात सरोषभरौ॥ भगवंत अनंत सुबुद्धि हिये जबलौं न शरासन बाणधरौ। जगदी- श न शीश हरें जबलौं तबलौं किनलै सिय पायँ परौ॥ प्रियछंद॥ ताते मतमेरो यह मानौ प्रियहीतैं। दीजो रघुनाथै सुखसाथै लैसीतै॥ तोमरछन्द॥ कह कोपि तौ बिसअक्ष। रिपुकेर ठानतपक्ष ॥ त्यहि ते उहैं किनजात। अस भाखि मार्यो लात॥ त्रोटकछंद॥ मोहिं मारेहु लात सो नीककिह्यो। करिताड़नकै प्रभु सौंह दिह्यो॥ प्रभु पै हम तौ अब जाहिंभजे। परराउरको हित रामभजे॥ अस भाखि सुमंत्रिन संग लियो। रघुवीरके तीर पयान कियो॥ सवैया॥ जे पदकंजन सों प्रगटी शुभदेवसरी त्रयताप नशावन। जे पदकंजन पादुकनै मन भारत लायरहे करिचावन॥ जेपदकंज कुरंग छली सँग धायचले भवदापन दावन। देखिहौं जाइसु आजुभले भग- वंत स्वई पदपंकज पावन॥ जे पदपंकज धूरिछुये ऋषिनारि तरी शिवमानस गोये। जे पदपद्म सप्रेम हिये सुबिदेहनिलै लय सादर धोये॥ जे पदकंज परेभे हरे बनदंडक पाप सशापके खोये। पाइहौं आजु सबै सुखमें भगवंत सोई पदपंकज जोये॥ कवित्त॥ दानि सुखदान के प्रमान है निगम बीच रावरी सुरीति क्यों न देखते

सँभरि हैं। जानराय जानि जनजीकी रुचि लालसाहु भायके न भायसी सुभायहौं निदरिहैं॥ भाग्यवन्त दीनबंधु जानिकै सुजन दीन कृपया कटाक्षकै बिषम पीर हरिहैं। करुणानिधान रघुबंश अवतंस आजु मेरे शिशि कञ्जपाणि जानकीश धरिहैं॥

यहिबिधि मन महँ करत बिचारा। आवत भयो सिंधु यहिपारा॥
कपिन बिभीषण देख्यो आवत। रिपुचर जानि राखित्यहिताबत॥
कपिपतिसन बरण्यो त्यहिबाता। सुनितिनजाय कह्योजगत्राता॥
नाथ अनुज रावण रिपु केरा। आवा मिलन तुम्हें यहि बेरा॥
कह प्रभु शरण जो आवा होई। मर्म्म बूझि लै आवहु सोई॥
प्रणतपाल मेरो यह बाना। शरणागत म्वहिं प्राणसमाना॥
सुनि कपि बृन्द हरषि उठि धाये। सादर त्यहि प्रभु पहँ लै आये॥
अनुज समेत देखि प्रभु शोभा। बोल्यो बचन बिगत मनक्षोभा॥

सवैया॥ नाम बिभीषण रावणको लघुभ्रात निशाचर के कुल जायो। तामस देह परायण पाप सुधर्म अचार न भूलिहु भायो॥ त्योंभगवन्त सु आपु यशै सुनि पावन मैं शरणैं तकि आयो। कीजिय त्रातु कृपालमया शरणागत पाल तुम्हैं श्रुतिगायो॥ दासन के हित राम सदासहि दुःख कियो निज दास सुखारे। सो बरबात प्रसिद्ध प्रभो यश पावन वेद पुराण पुकारे॥ ज्यों प्रह्लाद गयंदहु की सुनि टेर न देर किये दुख टारे। त्योंभगवन्त अनाथके नाथधरौ प्रभु हाथ सु माथ हमारे॥ राम गरीब निवाज हस्यो तुम दीन अनेकन को दुख गाढ़ो। शीत सुकंठ कियो रह्योजात जु बालि के त्रास महानल डाढ़ो॥ त्योंहिं बिभीषणहू कि सुनौ भगवन्त सुदास बिनै करै ठाढ़ो। रावण के अघओघ समुद्र में बूड़त नाथ भुजांगहि काढ़ो॥

कुंडलिया॥क्रीन्ह्यो दंडप्रणाम प्रभु लीन्ह्यो हृदय लगाय। निकट राखि पूँछी कुशल सानुज श्रीरघुराय॥ सानुज श्रीरघुराय कुशल पद पंकज देखे। मिट्यो अमंगल मूल धन्य निज भागहि लेखे॥ भाग्यवन्त बड़ जानि राम जल सागर लीन्ह्यो। कहि लङ्केश्वर ताहि तिलक लङ्काकर कीन्ह्यो॥ सवैया॥ जो सुख संपति रावण को शशिभाल दिये दशभाल चढ़ावत।जाबल तीनिहुँ लोकनमें दशकन्धर राजकरै मनभावत॥ सोइ बिभूति बिभीषणको रघुनाथ दिये पद माथहि नावत। यों भगवन्त सु साहेबसे भजि केन कहौ मन भावत पावत॥

दो० राम सुभाव सुरीति लखि हरषे सब कपि भालु।
सखा निकट बैठाय तब बोले राम कृपालु॥

सवैया॥ हे कपिराज सुलंकपती कपि भालु जे औरहुहौ मति आगर। देखहु सिंधु न पारभरे झख ऊरग नक्र औ कच्छप मागर॥ थाहि लहै नहिं घाट कहूँ सु अगाध महा नहिं बाटकि रागर। त्यों भगवन्त बिचारि कहौ क्यहि भाँतितरी यह दुस्तर सागर॥ पद्धरी छंद॥कह लङ्कनाथ सुनु दीनबन्धु। शोषै सुबाण तब कोटि सिन्धु॥ पर कहत नाथ अस नीति गाय। करिये ससुद्रसन बिनय जाय॥ सुनि प्रभु मंत्र बिभीषण केरा। बोले उचित कह्यो यहि बेरा॥ रुच्यो लषण मन यह मत नाहीं। जोरि पाणि बोले प्रभु पाहीं॥ नाथ रोष करि शोषिय याही। बिनय किहे जड़ मानतनाही॥ कह्यो करब ऐसहि परिणामा। अस कहि गये सिंधु तटरामा॥ करि प्रणाम बैठे कुशडासी। कृपासिंधु सुंदर सुखरासी॥

दो० जबहिं बिभीषण राम पहँ आये शरण सिधाय।

तबहिं दशानन बोलिके पठये दूत दुराय॥
छल मैं प्लवँगरूप ते धारी। रहे रामकर चरित निहारी॥
जानि सो मर्म कपिन जब पाये। तुरत बाँधि कपिपति पहँलाये॥
कह कपीश नासा श्रुति काटी। पठवहु फेरि इनहिं बहुडाटी॥
त्रासत दीन्हे राम दुहाई। सुनत सदयदिय लषण छुड़ाई॥
दशमुख कर यह पत्र हमारा। दै सँदेश बरण्यो मुख द्वारा॥
जो निजकुशल चहसि दशमाथा। सीतहि देइ मिलौ रघुनाथा॥
नाहिं तो चलि अब कालतुम्हारा। आवा कठिन न होइ उबारा॥
करि प्रणाम चर लंकहि आये। दै दशमुखहि पत्र सब गाये॥
सुनि संदेश बँचायसि पाती। सभयबिहँसि बोला कुलघाती॥
जान्यउँ मैं उनके प्रभुताई। बृथा करहु तुम निकर बड़ाई॥
सचिव बिभीषण सम जिनकेरे। कबहुँक पूर परै तिन तेरे॥
यहि बिधि रह्यो गालसो मारी। सुनहु राम यश भव भयहारी॥

दो॰ तीनि दिवस सागर निकट बिनये राजिव नैन।
जब नहिं मान्यो कोपि प्रभु साध्यो शायक पैन॥

भुजंगप्रयात छंद॥ जबै राम शारंग लैबाण तान्यो। भयोक्रुद्ध श्रीराम सामुद्र जान्यो॥ सभै बिप्र ह्वै रत्नलै भेंट आयो। रचैं सेतु नलनील मंत्रै बतायो॥
ये द्वउ कीश महाबल बीरा। रहत रहे ऋषि आश्रम तीरा॥
जब कहुँ कुटी छाँड़ि ऋषिटरहीं। तब ये अमित उपद्रव करहीं॥
शालिग्राम शिला गहि ल्याई। जलमें फेंकि देहिं अन्याई॥
यहिते ऋषिन शाप इमि दीन्हा। इनकर पाहन परशन कीन्हा॥
दो॰ जल में नहिं बुड़िहै कबहुँ यहै हेतु जियजानि।

सेतु रचन नल नीलही कह्यो वारिनिधि आनि॥
यह मतदै रघुबीरको प्रभु आयसु पुनि पाय।
गयो सिंधु अपने भवन चरण कमल शिरनाय॥
रामचरित अद्भुत अमित पार न पावत वेद।
भाग्यवंत गावत सुनत नाशै कलिमल खेद॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
सुन्दरकाण्डसमाप्तवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

इतिसुंदरकाण्ड समाप्तम्॥



भक्तिशिरोमणि लङ्काकाण्ड ॥

छप्पै ॥ जै शिवसुखद सुजान सदय प्रणतारति मोचन। कृपासिंधु सुखधाम अमल पंकज दल लोचन॥ उमारमण दुखदमन शमन त्रयताप सुरेशं। प्रणत कल्पतरुनाम नमत बाँछित प्रदवेशं॥ जै जै महेश सेवत सुलभ शरणागत बत्सल प्रबल। नित भाग्यवंत बन्दन करत शिव पदपंकज रज अमल॥

दो० गुरुपद कमल प्रणामकरि सिय रघुबीर मनाय।
भाग्यवन्त श्रीराम यश बरणौं सब सुखदाय॥
तब नलनीलहि बोलिकै कह्यो भानुकुल केतु।
जलनिधि पारहि जानहित रचहुबेगि दृढ़सेतु॥
सुनि निदेश मर्कट बिपुल चहुँदिशि चले सुखेन।
लागे गिरिगण आनि बहु नलनीलहिते देन॥
प्रभुप्रताप अतिशय सुदृढ़ रचेन्हिते सेतु बनाय।
हरषे लखि रचना ललित सानुज श्रीरघुराय॥
सो० शिवस्वरूप सुखधाम थाप्यो तहँ रघुबंशमणि।
रामेश्वर इति नाम कहि बरण्यो महिमा अमित॥

इनकर दरशन लोग जेकरिहैं जगमहँ सुजन।
ते तजिकै सब शोग बसिहैं ममपुर जायकै॥
यहिविधि अमित महातम गाई। कहेउ कृपानिधि सबहिं सुनाई॥
पुनि रघुबीर रजायसु पाई। चलेउभालु कपि कटक बजाई॥
कउ जलचरन्ह उपरचढ़ि जाहीं। कउ मगसेतु कऊ नभमाहीं॥
कौतुक देखि मुदित रघुराई। सादर शिवपद शीशनवाई॥
अनुज सहित प्रभुकीन्ह पयाना। भये सगुन सुन्दरशुभ नाना॥
दो॰ सेनसहित रघुबंशमणि उतरि बारिनिधि पार।
डेरा कीन्ह्यो जायकै हरण अखिल भवभार॥
दशमुख सुन्यो पार तरि आये। सहित सेन कौशल्ल नृपजाये॥
व्याकुल मनमहँ करत बिचारा। गयउ भवन कुल बिटप कुठारा॥
तब मयसुता जाय पगलागी। बोली बचन परम अनुरागी॥
परिहरि क्रोध नाथ ममबानी। करहुश्रवण हित आपन जानी॥
हरिगीतिका छन्द॥ नाथतजि रघुनाथ सों सब बैर नावहु माथही। लयदेहु सादर जाय सिय परिपायँ करिपुट हाथही॥ श्रीराम करुणासिंधु आरतबन्धु जनरक्षक सदा। अवलोकि क्षमिहैं शरण निज अपराध पिय कीन्हयो यदा॥
दो॰ मधु मुर कैटभ से सुभट जिनमारे रणजीति।
तिनकहँ जनि मानुष गनहु मानहु बचन प्रतीति॥
सवैया॥ रामकि बाम जुआन्यों चोराइ बेसाहेहु सो पिय बैर महाहै। जालगि क्षीरसमुद्र मथ्यो यह तुच्छ त्वया गढ़लंक कहाहै॥ सीयस्वयम्बर क्यों न बस्यो यह पौरुषका तब तौ न रहाहै। जानि परै युतबंश तुम्हैं अब चाहत काल कराल गहाहै॥ तारक छन्द॥ तेहिते तजिमान भजो रघुबीरै। हित आरत भञ्जन भौभय भीरै॥

ज्यहिते अहिवात रहै पिय मेरो। यश पावन पुञ्ज जगै जग तेरो॥ सुनि बाम कि बानि कह्यो अभिमानी। डर नाहकतें मनमें प्रियमानी॥ सचराचर बश्य अहै जग मेरे। क्यहि लागि प्रिया उपजा भय तेरे॥ किरीट छन्द॥ मैं निज बाहुनके बलसों युग चौंसठि राज किह्यों मनभायन। देवसुता नर नागसुता मनरूचक जे बरिबर्वस लायन॥ त्यों भगवन्त न आन गन्यों भट कन्दुक ज्यों शिव शैल उठायन। देखत सो भुज भामिनि क्यों कहुजाय परों अब शत्रुके पायँन॥ यहिबिधि प्रियहिं बहुत समुझाई। चढ़ि अट्टालक बैठ्यो जाई॥ तहां होइ अति रुचिर अखारा। देखनलाग जाइ मदभारा॥ परम प्रबल रिपु शिरपर आयो। तदपि न शोच तनकमनलायो॥ कोटि इन्द्र सम बिभव बिलासा। सन्तत करत न मनमें त्रासा॥

नाराच छन्द॥ इहां श्रिराम सैनसा सुबेल आयकैरहे। बढ़्यो प्रमोदजाल तत्र मालशोक के दहे॥ बिलोकि रामचन्द्र चन्दओर पूर्व योंकही। कहौ निशेश माहिं श्यामताय कौनहै सही॥ कह्यो सुकण्ठ भूमि छाँह श्रूयभाख योंकई। हत्योजु राहु चन्दहीय श्यामतातिहै स्वई॥ रच्यो जबै बिरश्चिहै रत्यास्य काढ़ितौलियो। निशेश सारभाग ब्रह्मिकोइ छिद्र सोहियो॥ सुबाट तत्र व्योम छाँह पर्त जो हि जानियो। सुश्रूय रामचन्द्र आपु फेरियों सुभानियो॥

दो० गरल अनुज शशिकरप्रिया निजउर दीन्ह्यों बासु।
सबिष निकर कर काढ़िसो जारत बिरहिन आसु॥

सो० सुनि प्रभु बचन बहोरि चरणकमल शिरनायकै।
पवनतनय करजोरि बोल्यो अति मंजुल बचन॥

॥ सवैयां॥ हे रघुबीर कृपाकर धीर सुसेवत पीर डरौ तन खोई। अद्भुत आपु चरित्र सबै भगवन्त सुजानि न पावत कोई॥ हे प्रभु

पूरण दास त्वया शशि आस न आन लिये मनकोई। मूरति आपु बसै विधुके उर श्यामलता रघुनायक सोई॥ दोधक छन्द॥ मारुतनन्दनकी सुनि बानी। भेंति प्रसन्न श्रिराम सुजानी॥ दक्षिण ओर निहारि बहोरी। राजिवनैन कह्यो सुखबोरी॥

दो० हेलङ्केश्वर देखु यह हैका दक्षिणओर।
घनइव गरजत होतजनु उपलवृष्टि अतिघोर॥

तब लङ्केश कह्यो सब हाला। दशमुखकरअतिबिभवबिशाला॥ सुनि प्रभु बिहसि नराच चलायो। छत्र मुकुट ताटङ्क गिरायो॥ रावण सभा चकित रहिगयऊ। होत महा यह असगुन भयऊ॥ बोला शीश गिरे भल जाको। खसे मुकुट कसअनभल ताको॥

दो० यहिबिधिकहि सबसन कहेउ करहुजाय गृह शैन।
समय पाय मन्दोदरी बोली भरि जल नैन॥

सवैया॥ पति मानहु बात कही हमरी रघुबीर सों दूरि विरोध करौ। जनि मानुष जानि तिन्हैं मनमें वश मोह न यों हठ आनि धरौ। सचराचर व्यापक ब्रह्म उन्हैं भगवन्त बिचारि सुहित्त सरौ। प्रभु मोहिंसमेत सुलै सियको रघुबीरके पायँन जाय परौ॥ होरी॥ पिय मानो कही मम बात सही रघुबीरसों रारि रचौना॥ आदिपुरुष अलखित गति जाकी बूझिं प्रभाउ परौना। नेतिनेति ज्यहि वेद पुकारत पावत पार हरौना॥सकलसुख मंगल भौना॥ शंकरचाप कठोर महा अति बिदित भुवन तिहुँ जौना। राजसभा रघुनन्दन तोरयो कमलनाल सम तौना॥ कहा तुम बाण रहौना॥ बालि महाबलशालि रह्योहै प्रतिभट जासु कतौंना। एकहि बाण प्राण तेहि लीन्हे छल बल एक चलौना॥ तुम्हैं किय कांखमें जौना॥ जाको दूत एक पुर आयो कीन्ह्यो सबहि खेलौना। जारिकै लंक

रच्यो होरी ज्यहि घरघर कीन सुगौना ॥ रह्यो तब ह्वै कत मौना ॥ यों भगवन्त कहत मंदोदरि सुनहुनाथ दें श्रौना। सीता देइ मिलौ रघुनाथै नाहिं तो मरन सचौना ॥ भागि तिहुँलोक बचौना ॥

दो० मंदोदरी वचन सुनि विहसि कह्यो मतिमन्द।
अहो मोह ममता प्रबल को न पर्‌यो त्यहि फन्द ॥

सवैया ॥ औगुण आठ सदा निवसैं उर नारिन के कबि वृन्दन गाया। साहस भै अविवेक अशौच अनृत्यअदे अरु चंचल माया ॥ तैं रिपुरूप करांल महाप्रिय गाय हमैं अति भै उपजाया। सो सहजै वश मोहिं प्रिया सब जानि प्रसाद त्वया अब पाया ॥

दो० यहिमिस प्रभुता अमित मम कीन्हयो प्रिया बखान।
तुम समान चातुरत्रिया जनम्यो जग नहिं आन ॥

अस कहि सो शठ सोवन लागा। मंदोदरी हृदय दुखजागा ॥
काल बिवश प्रिय मति बौरानी। सूझिपरै कछु लाभ न हानी ॥
प्रात प्रगट दशकन्धर जागा। गयउ सभा उठि अबुध अभागा ॥
लागे किन्नर गुण गण गावन। बैठ अशंक लंकपति रावन ॥

दो० मित्रभाव चाहै भजै चैहै भजै अरिभाव।
राम मिलन संशय नहीं भाग्यवन्त श्रुतिगाव ॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेलङ्काकांडे श्रीरामचन्द्रसुबेलशैलागमनवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

सवैया ॥ करुणालय पालय दीनजनं अघदालय घालय शोक लदा। यशपावन चावन ध्यावन त्यों रिपुरावन दावन वेदवदा ॥ खल खण्डन मण्डन भूमि अखण्ड प्रचण्ड प्रताप प्रगट्ट यदा। पद बन्दन हौं भगवन्त करौं युत जानकि जानकिनाथ सदा ॥

दो० इहाँ प्रात रघुवंशमणि पूँछ्यो सचिव बुलाय।

कहहुबेगि का करिय कह जामवन्त शिरनाय ॥

जामवन्त सवैया ॥ हे रघुवीर कृपा सुखसिंधु सुआरतबन्धु दया उरधारै । नीति निधान सुजान शिरोमणि कीरति पुञ्ज सुछन्द पुकारै ॥ जानत हौ सब पूंछत मोहिं सुमंत्र कहौं निज बुद्ध्यनुसारै । जो भगवन्त सुभाव मनै प्रभु दूत पठाइय बालिकुमारै ॥ रामसवैया ॥ बालितनय बलबुद्धि निलै ममकारज आजु सु लंकहि जावो । रावन देव सतावन सों कहि पावन धर्म हिये दरशावो ॥ हौ अतिचातुर तातुम्हैं बहुभांति कहां कहिकै समुझावो । काज हमार हुवै हित तासु सो दै उपदेशन आतुर आवो ॥ प्लवंगमछंद ॥ हे रघुबीर सुसिद्धि स्वयं तव काजहैं। दीन्हयउ आदर जानि सुसेवक आजहै॥ बंदि कृपानिधि पायँ शिरायसु राखिकै । अंगद कीन पयान सु जय जय भाखिकै ॥ त्रोटकछंद ॥ पुरपैठत रावण पुत्र मिल्यो । कपि कौन कहां इत जात चल्यो ॥ हम दूत अहैं रघुनायकके। त्रिशिरा खर दूषण हायकके॥ पितु आन्यउ बाम जिन्हैं कि स्वई । तव फूफुहिं कीन्ह कुरूप ज्वई॥ सुनि लात उठायउ अंगदको । पटक्यो गहि पांव तबै बदको ॥

यह कौतुक बिलोकि चुपसाधी। जहँ तहँ चले भागि अपराधी ॥
कोलाहल पुर भयउ अपारा। आवा कीश नगर ज्यहिंजारा ॥
परम त्रास उपजा सबकेहीं। बिनु पूंछे कहि मारग देहीं ॥
यहि बिधि जाय बालिसुतबंका। रावण द्वार अट्यो निरशंका ॥

दो० तुरत निशाचर एक तब पठयो रावण तीर।
जाय कहौ तेरे निकट आयो कपि यक बीर॥

दूततोमरछंद॥ सुनियो सु निशिचर राज। यकदूत श्रीरघुराज॥ कर आपुके दरबार। पर आइयो बलभार ॥ रावण॥कपि बेगि ला-

वहु जाय। तकिये कहांकर आय॥ सुनि बोलि निशिचर कीश। लैगे जहां दशशीश॥

रावण दोहा॥

रे वानर कहु कौनतैं कहा हवै तवनाम।
कौन पठायो है इहां कहु आये क्यहिकाम॥

अंगदसवैया॥ मैं रघुबीरको दूत दशानन अंगद नामहै वानर जाती। श्रीरघुवीर पठायो हमें इत रक्षण हेतु त्वंया कुलघाती॥ सो तजि मान भजै भगवान अयान चहै निज जो कुशलाती। नाहिं तो चाहत होन दशा तव दूषण बालि कि भै ज्यहिभांती॥ रावण सवैया॥ कौनबिपत्ति परी कहु मोहिं जु आयसि त्रातु करै शठमोरी। मैं वहि मानुष काह भजौं सचराचर मोहिं रह्यो करजोरी॥ मोसम को भगवन्त बली प्रभुता ज्यहि जाहिर है नहिं थोरी। अंगद बात बिचारि कहै नहिं जानि परै तव बुद्धि भै भोरी॥ अंगदसवैया॥ रेमतिमंद बकै कस व्यर्थ न सूझत नेकु तुझे बशमोहै। पूरणब्रह्म चराचर व्यापक हारकभार मही करजोहै॥ सेवत देव अजादि यदा भगवन्त जु प्राण सदाशिव कोहै। जारजफंद त्रिलोक बँध्यो दशकंधर अंधर क्यों नर सोहै॥

दो० तासु नारि हरि आनि शठ क्यों स्वैहै सुखसैन।
परि है यह फल जानि तब जब छुटि हैं शरपैन॥

रावण॥ कहु कौन को बालक अंगद तैं यहि भांतिन जो बढ़ि बोलतहै। भगवन्त अशङ्क न शङ्कधरै मनहींमन माहिं कलोलत है॥ हमसो भट निन्दि तपस्विन को कहि पुञ्ज प्रभावहि खोलत है। कतचाहत जान तुकाल मुखे शठ ह्यांसन क्यों नहिं डोलतहै॥

दो० म्वहिं समान योधाप्रबल जनम्यो जग नहिंआंन।

त्यहि आगे अङ्गद कहा नरकर करसि बखान ॥

अंगद कवित्त ॥ बालि बलशालि जो प्रसिद्ध है सुभटलोक जानतहौ ताहि तुम रह्यो जाकी कांखही।ताहीकर बालकहौं अंगद श्रिराम दूत प्रभुको सुबल पाय बात बढ़ि भाखही॥ कीन्ह्योंहैविभीषण अनाथ लंकनाथ जौन सोई रघुनाथ चलि हेरै किन आंखही। भाग्यवन्त कहौं सत्य नातरु करालकाल आयो दशभाल तव ताते बढ़ि माखही ॥ रावण त्रोटकछन्द ॥ कहु अंगदहै वह बालिकहां॥ अंगद।दशग्रीस म देख्यउ जाय जहां॥ रघुबीर बिरोध किये गति ज्वै। बरणी त्वहि रावण सादरस्वै ॥ रावण सवैया ॥ अंगद बात सुसत्य बताउ तहीं त्यहि बालिको बालक जाये। चाहिय तासु कि ऐसि दशा भगवन्त तनै ज्यहि तो समपाये॥ जन्मत क्योंन गये मरि अंगद बालिबलीकर नाम धराये। जे तव तात किये हठिघात तिन्हैं कर तैं शठदूत कहाये ॥

दो० ताते ममदल लै अबहिं चलि मारौ द्वउ भाय।
अंगद अपने बापको लीजे बैर चुकाय॥

अंगद गंगाधरछन्द ॥ नीचरे मीच के बश्य बोलै कहा बाढ़ि ऐसो तुझै लाजआवै नहीं। ठानतो भेदहै मूढ़ मेरे मनै जोरते पौन के शैलडोलै कहीं॥ भृत्यहैं जासु ब्रह्मादि है तासु हौं दास बोरे कुलै काह व्यर्था रटै। लावतो ईशमें भेद जोरे कुबुद्धे तऊना ह्वदै मूढ़ तेरो फटै॥ रावण गीतिका छन्द ॥ रे दुष्ट टेढ़े बैन तेरे आजु में जो साहतो। सो जानतो कछु धर्म नय गमखाय तासों राहतो॥ अंगद॥ तव नीति धर्म सुशीलता शठ सुनी हौं हूं कान है। पर बामचोरी करत याही काम नाहिंन आनहै॥ सवैया॥ काननलाक बिना अनुज्ञा निज नैनन हेरि महादुख दागी। कीनं क्षमा तुम

धर्म विचारि न नेकहु लाज हियेतव लागी॥ त्योंभगवन्त सुशीलत धर्म दशानन पुंज त्वया जग जागी। रामप्रताप प्रतापबली तव पायनदर्श हमों बड़भागी॥ रावण पद्धरी छंद॥ शठ कीश काह जल्पै तुव्यर्थ। भट अहै कौन हमसों समर्थ॥ ज्यहि सहित शम्भु कैलास शैल। लीन्ह्योउठाय मनपरम चैल॥ अंगद बंधुछंद॥ कौन बड़ी प्रभुता तुम कीन्हे। कीश फिरैं बहु शैलन लीन्हे॥

रावण दोहा॥

अंगद तेरें कटक में कौन अहै अस शूर।
जो मोसन करिकै समर पाय सकै कहु पूर॥

कबित्त॥हीनबल नाथतव नारि के बिरह आपु अनुजहु तासुदुख दुखित बनायकै। तुम शुभग्रीव दोऊ कूलके बिटपअहो अनुज हमार ह्वै भीरु सो सुभायकै॥ शिल्पकर्मजानै नल नील भालु जामवन्त बूढ़ोसो अत्यन्त भयो जर्जर सुखायकै। भाग्यवन्त आहै कपि एकही सुभट जौन आयकै प्रथमगयो लंकही जरायकै॥ अंगद कुण्डलिया॥ सुनु रावण साँचीकहै जारयो पुर हनुमान। म्वहिं अचरज सुनि होतहै तेरो पुर बलवान॥ तेरो पुर बलवान दह्यो किमि कीश अकेला। बीर न सो बहुचलत कहौ ज्यहि भट अलबेला॥ अलबेला सुग्रीवकर सो धावन प्राचीअहै। खबरिलेन पठवा हमैं सुनु रावण साँचीकहै॥ सही बचन तैं जो कही मोहिंन सुनि कछु क्षोभ। कोउनहमरे कटक अस तोसन लड़िलहै शोभ॥ तोसन लड़िलहै शोभ बधै मेढुक मृगराई। कहैन कउ भलताहि हते तिमि त्वहिं रघुराई॥ रघुराइहिं लघुता परम समुझि न त्वहि मारनचही। तदपि रोष रावण कठिन क्षत्रिजाति कर है सही॥

दो॰ ताते मम सिख मानिकै छाँड़ि सकल फरफंन्द।

सादर दे श्रीजानकी परुपायँन रघुचन्द ॥

रावण सवैया॥ है कपिके गुण एकबड़ो बहु यत्नकरै प्रतिपालक काजै। धन्यसु साहबहेत जहाँ तहँ नाचत जो करि त्यागन लाजै॥ त्यों भगवन्त सुसाहब को नित नाचि सुकूदिकै कारजसाजै। अंगदजाति त्वया प्रभुभक्त कहै गुण स्वामि न क्यों इमिआजै॥ अंगद कवित्त॥ तेरी गुणगाहता समीरसुत सत्य मोहिं नीकेकै सुनायो जाय राघव समाजहै। कानन उजारि सुतमारि पुरजारे तव तदपि न तासु कछु कीन्हे तू अकाजहै॥ कह्यो हनूमानसों बिलोके हम आनि सब साँचेहू न माखमन तेरे रोषलाजहै। भाग्यवन्त सोई तव प्रकृति बिचारि भली कीन्हीं अति ढीठताय तोसों हम आजहै॥ रावण इन्द्रवज्रा छन्द ॥ जोपै कुबुद्धी असि तोहिं आई। तौ तौ सुतातें लिय होतखाई॥ अंगद॥ खायों पिताको अब खाततोहीं। पै बूझिआयो कछु आजुमोहीं॥ सवैया॥ बालि महा बलशालि रह्यो यशपावनपुंज जगै जगजाका। जासम बीर त्रिलोकन में भगवन्त नहीं हम दूसर ताका॥ ता यश खोलन को दशकन्धर जीवत जौलगि है तु पताका। सोइ बिचारि सुनै शठ रावण आजु करौं नहिं तोहिं हलाका॥ रावण कवित्त॥ बोलु रे सँभारि क्यों न बानर लवार नीच मीचुको सुदानिहै बताउ कौन मोहिंरे। जासु त्रास कम्पित सकललोक लोकपाल कालहू कराल व्याल कीन बश्य वोहिंरे॥ होसि क्योंन आनिहौं शरणछाँड़ि वा शरण भाग्यवन्त बाहुये प्रबल बीस जोहिंरे। काल्हिही सँहारिकै सबन्धुसो नृपालपुत्र बालिपुत्र कारिहौं सु बानरेश तोहिंरे॥ अंगद कवित्त॥ आयो दूत जाको एक बैरिन अनेक बीच नीचन सँहारि गढ़ लंक गयो जारिकै। थाक्यो करि बुद्धिबललाग्यो न उपाय एक

कपिको चरितदेखि बैठ्यो सबै हारिकै ॥ सोई बल रावण बिचारि मनमाहिं तब आयों सिखदेन कहौं तोसन पुकारिकै। भाग्यवंत देहुलय जानकी शरणजाय पाइहौ न पार रघुबीर जूसों रारि कै॥ सवैया ॥ सादरलै मिथिलेशललो किन आंधरहोसि न संगहमारे। मैं प्रभुसों क्षमवाइहौं भूरि जरूररे कूर कसूर तिहारे ॥ त्यों भगवंत बिचारि लखै करि बैर उन्हें क्यहुँ पार न पारे। ईशदई बखशीश दशानन खीसकरै जनि बातके मारे॥ तेरेइकर्म सुबाहुगये मिटि तेरेइ कर्म खरादिकं नासे। तेरेइकर्म मस्यो सुतअक्ष सुतेरेइ कर्म जरेगृह खासे ॥ तेरेइ कर्म प्रधान सबै शठ तेरेइकर्म य बैरप्रकासे। खानचहैं सुनु तोहिं दशानन तेरोइकर्म तुझे अब गांसे॥

दो॰ ताते रावण छांड़िकै उरसि द्वैत की बास।
कर्म वचन मन कपट तजि होसि रामको दास॥

रावण सवैया ॥ जोतुमहीं तजि आसभयो हरिदास भलोफल कौन है पायो। दीहिनि काल कराल मुखे त्वहिं मेलिन नेकु दया उनलायो॥ क्यों बचिहौ हमसों अब आजु सलोकहु तौ परलोक नशायो। ऐसेहि नाथ भजे हितअंगद मो कहँ देन भलीसिख आयो॥ अंगद सवैया॥ रे त्रियचोर कथंनरते जिन बालिबली शर एकहिमास्यो। बीरबड़े त्रिशिराखरदूषण भागि बचे न त्यऊ रणपास्यो॥ तोरि शरासन सीयबस्यो भृगुनंदनको जिन गर्व उतास्यो। क्यों लड़ि पावहुपार तिन्हें दशकंधर बंदरसों ज्यहिहास्यो॥ रावण सवैया ॥ देखि डरैं द्विजगायनजे रघुनाथ अनाथहि सेवतचीन्हे। छोड़तहैं परद्रव्यसदै परदार बिलोकत लाजहि लीन्हे॥ होत न है परद्रोह जिन्हैं भगवन्त रतीमन धर्महि दीन्हे। तेलड़िहैं कहु मोसन क्यों बन घूंमत बेष यतीकर कीन्हे ॥ अंगदहरिपदछंद ॥ रे रावण

बलवंत तोहिं मैं मनमें तनक न डर्ता हौं। रामकृपा बलपाय स्वामि को संतत अभै बिचर्ता हौं॥ त्वहिं पितुको गुनि मित्र आपने हित उपदेश उचर्ता हौं। भाग्यवंत गहु शरण रामकी याही सिखवन कर्ताहौं॥ रावण॥ तीनिलोक ममशरण आजुहै हम क्यहिशरणहिं जावेंगे। का करि हैं तपसी वै मेरो साजि सेन जो आवेंगे॥ हैहै एक दिवस को चारा कुंभकरण छकि जावेंगे। उनकर हैहै मृत्यु हमारो सुयश देव गण गावेंगे॥ अंगदसवैया॥ रावण रावण कै जगमें कहु मैं जे सुने सो सुनावत तोही। एक पताल गयो बलि जीतन बांध्यनि बालकहे गृहजोही॥ खेलहिं बालकवृन्द तहांकरि कौतुक मारहिं ते बहुओही। त्योंभगवन्त सुदेखिसदै बलिजाय छँ-ड़ाय दिये सुरद्रोही॥ एक बिलोकि सहस्रभुजा जलजन्तु यथा धरि धायकै लीन्ह्यनि। कौतुकलागि गये लै मन्दिर जाय छँड़ाय पुलस्त्य सो दीन्ह्यनि॥ एक सकोच बतावतहै त्वहिं बालि निजै ज्यहि कांखमें कीन्ह्यनि। त्यों भगवन्त अहै इनमें कहु रावणकौन नहीं हम चीन्ह्यनि॥ रावण कवित्त॥ रे रे शठ कीश सुनु सोईद-शशीश बीशबाहुकोप्रभाव जान शम्भु शैल जाको है। जानैं शिव शूरता सरोजसो उतारिशीश पूज्यों निजपाणि जायबार भूरि ताको है॥ जानैं बलबाहु जाल जाको दश दिग्गपाल आजौ उर होतशाल जाके सुनि हाँको है। सोई दशशीश लोक लोकनको ईश जौन भाग्यवन्त धीर त्यों प्रसिद्ध बीर बाँको है॥ सवैया॥ जानत दिग्गजहैं दशहू सुनु अंगद हौंउरकी कठिनाई। है मद-मस्त जबै जबजाय बजायभिरयों तिनसों बरिआई॥ त्यों भगवन्त सुदन्तनसों जिन फोरि करालदिये बहुताई। लागत चोट अहं उरकी रद टूटिगये स्वइ मूलक नाई॥ करि कोपजबै सुनु अंगदहौं

बलवन्त सुभाग्र चलौं धरणी। तब डोलतहै यहि भाँतिनसों चढ़ते गजमस्त यथा तरणी॥ भगवन्तसु गायकहौं कहँलौं निज पौरुष की बरनैं करणी। लघु बोलसि क्यों त्यहि रावण जासुन कीरति पुंजपरै बरणी॥ अंगद सवैया॥ दाहकबह्नि कुठार यदा सुजसा-हसबाहु अरण्य भयोहै। सागरसों परसावर जामधि बूड़ि महीपति भूरिगयो है॥ भागिगयो ज्यहि देखत गर्व सुकीरति पुंज त्रिलोक छयो है। सो भगवन्त अहै नर क्यों महिभारहरै अवतारलयो है॥
सुनु शठ राम मनुजहैं कैसे। सब धन्विनसम काम न जैसे॥
नहिं सुरसरि सबनद्दिन समाना। कामधेनु नहिं पशूप्रमाना॥
सुरतरु क्यों सब तरुसम होई। दान न अन्नसरिसहै कोई॥
नहिं पियूषसम रसहै आना। नहिं खगेश सबखगनसमाना॥
अहिन सरिस सबहैं न अनन्ता। नहिं सबउपल यथामणिचिन्ता॥
नहिं बैकुण्ठ सरिस सबलोका। लाभ न जसि हरिभक्ति अशोका॥
तिमिनमनुजसम राम विचारयो। पूरणब्रह्म मनुजतनु धार्यो॥
जासु भजनबिनु सुनु मतिमन्दा। छूट न विषय मोह भ्रमफन्दा॥

दो० रामभजन बिन जो चहैं भवनिधि पारहिजान।
सो मतिमंद कुभाग्य शठ पांवर परम अयान॥

रावण सवैया॥ बालिके बंश कुठार भयो तुम अंगद नाम धरा-यहु सोऊ। दीख नहीं अस जायंपरै पितुघातक पायँन के तरकोऊ॥ ज्यों भगवंत अहै जनतै प्रभु आनिमिले त्वहि तैसहिओऊ। बोलसिरे बढ़िकाहबृथा करिदीन द्वऊ तुमहै कुलधोऊ॥ अंगद सवैया॥ रावणदेखु बिचारि हिये सब नस्वररूप अहै जगजोऊ। या जगमें रहना न क्यहूँ उठिजैहहि एकदिना सबकोऊ॥ अन्तसमय कउ कांमनआवंत छूटत प्राणप्रिया तनु सोऊ। त्यों भगवन्त सुजानि

यही किन सेवक साहब रामको होऊ॥ रावण॥ राजदियो दशयान जिन्हैं सुनु अंगदतें अतिबीर बतायो। छोरिलियो स्वइ भारतभाय सनारि तिन्हैं बन मारिख्यदायो॥ राखिरही नहिं राजदई पितुजानि पुभाव तबै हमपायो। ते जिति हैं कहु मोसन क्यों मम राजहि आजु जु छोरनआयो॥ अंगद भुजंगप्रयात छन्द॥ रहे क्या मृषा मूढ़तें मारिगाला। किये रामसों बैर है है यहाला॥ त्वया शीश ये पुंज कीशोंके आगें। परैंगे मही राम नाराचलागे॥ स्वई शीश तौ गेंदसों भालुकीशा। ख्यलैंगे सुचौगान रेवाहुबीशा॥ सुक्रुद्धैंगे श्रीराम संग्रामज्योंहीं। छुटैंगे करालाति नाराचत्योंहीं॥ चलैगो नतौ गाल ऐसो तुम्हारा। भजै जानियों क्योंन रामैउदारा॥ रावण सवैया॥ कुंभकरन्नसों भाय अहै ज्यहि पुत्र प्रसिद्ध है शक्रजितैला। मोर पराक्रम तें न सुने सचराचर जीति धस्यों कर शैला॥ त्यों भगवन्त सुजाहिर है भट रावण देवनवृन्द सतैला। ताहिकहा सकिहैं करि रैनर बानर जन्मनके जोहरैला॥ कवित्त॥बानरबटोरि लघु वारिधि बँधायो सेतु प्रभुता सुकीन बड़ी याही तव ईशरे। नाघहिं अनेक खग वारिधि न होहिं शूर पूरणजो बलवारि मेरे बाहु बीसरे॥ बूड़े हैं अपार जामें सुर नर शूर बीर पाइहैकोपार भुजबीसहु नदीशरे। भाग्यवन्त ऐसो बलवन्त दशशीश ताहि नरको प्रभाव तें सुनावै कहा कीशरे॥ तोटक छंद॥ दिगपाल भरैं ज्यहिके जलको। शठ थाह कहा त्यहिके बलको॥ बलवन्त जु होतै नाथत्वया। नबसीठ पठावत मोहिं त्वया॥ जरते निज दीख कपाल जबै। बिधि अंक लिखे निजभाल सबै॥ नरकेकर बाँचि सु मृत्यु तहां। बिहसेउँ बिधि बानि असत्य महां॥

दो॰ सोउनसमुभिम्वहिंत्रासबिधि लिख्योजरठमतिभोर।

आन बीर शठहै कहा मम आगे बर जोर॥

अङ्गद सवैया॥ कौन किह्यो करतूति बड़ी तुम बारहिं बार जु मोहिं सुनायो। शैल उठाय धरयो करपै उन कीशन सों यह काज करायो॥सागर दूत तरयो उनको धनुरेख न पै तुम नाँघन पायो। जानि परयो बलपुंज दशानन जाय जबै पर बाम चुरायो॥ कुंडलिया॥ सुनु रावण काटे शिरहि होत नहीं कोउ शूर। इन्द्रजालि तनु काटि सब डारै स्वकर हजूर॥ डारै स्वकर हजूर शलभ जरते बश मोहै। बहत भार खरबृन्द कहत तिनको भटकोहै॥ कोहै अधम अबुद्धि सरिस तेरे शरमावन। बकसि बृथा कत मूढ़ विवश सबके सुनु रावन॥ सवैया॥ जनि रावण बात बढ़ावसिरे सुनु मैं जु कहौं तजि मानसही। न पठायउ नाथ बसीठ हमैं कह्यो बारहि बार पुकारि यही॥ यश सिंहहि नाहिंन स्यारबधे सु विचारि सह्यों कटु जौन कही। दशकंठ नतौ मुख भंजनकै तब जात्यउँ लै सिय राम जही॥ सुन्दर छंद॥ प्रभु सेवक को लघु सेवक मैं रजनीचर ईशतु गर्व भरौरे। अपमानहिं रामहिं जो न डरौं त्वहिं देखत कौतुक यों सु करौंरे॥ पटकौं महि सेनस तोहिं अबै करि चौपट तौसब गाउँ डरौंरे। युवतीनस तौ सिय लैभगवन्त श्रिरामके पाँयन जाय परौंरे॥ तू मदअंध दशाननरे यहि भाँतिन बैठ जु मारत गालहि। सो त्वहिं देतबताय भले इन बातनको कुल घातक हालहि॥ बीस भुजा दश शीश उपारिकै मेलत मारि अबै मुख कालहि। पै भगवन्त बिलम्ब यहीशठ आयसुहै नहिं राम कृपालहि॥

दो॰ सुनु रावण मैं आजु जो करौं दशा असि तोरि।
तदपि न होवै बीरता मुयहि बधे कछु मोरि॥

सवैया॥ मारग बाम चलै नितही बश काम विमूढ़ अहै रुज

खानी। सूमसहा अयशी अतिमूढ़ बिरोधक बेदन बिष्णुहि जानी॥ क्रोधित निर्धन पोषक अंग अघी परनिंदक जो नितठानी। त्यों भगवन्त बिचारि लखै यइजीवत शवसम चौदह प्रानी॥ तोमरछंद॥ अस जानिरे त्वहिं आज। नहिं मार तो निरलाज॥ सवैया॥ तोसनरे समुझाय कहौं दशकन्धर बात बिचारसिहीतैं। राम बिरोध न पैहहि पार सु यद्यपिहै अनपार बलीतैं॥ देखु कहाँ खरदूषण बालि सु कारक औरहु जे अनरीतैं। त्योंभगवन्त सबेर अबै किन रामहिं जाय मिलै दय सीतैं॥रावण॥मारिकै बानरराजहिं जो त्वहिं अंगद बानरराज बनावैं। फोरहिं सेतु जो सागर को त्वहिं बाँधि बिभीषण भीरु पठावैं॥ पूँछ दहैं रिपु अक्ष कि जो शिर सादर आय सुरुद्रहि नावैं। तौ भगवन्त उन्हैं सिय देउँ जो बारिधि पार ह्वऊ तरि जावैं॥

अङ्गद दोहा॥

लङ्कहि आजु उखारिकै देत्यों उलटि स तोहिं।
भये बिभीषण राज पर याही डर अति मोहिं॥

रावण॥

सुनु शठ जिनके बलहितै बोलत बात बढ़ाय।
ऐसे मनुज निकाय नित डारत निशिचर खाय॥

छप्पै॥ तब अंगद करि कोप अवनि दोऊकर मारयो। मुखभर गिरयो दशास्य मुकुट भूतल शिर पारयो॥ शिर धारयो त्यहि कछुक कछुक अङ्गदकर लीन्हे। प्रेरेउ प्रभु के पास धरयो पवनज प्रभु चीन्हे॥ दिनराज सरिस परकाश बर निरखि भालु कपि सुख भिये। पुनि सम बिभीषण के शिरहि स्वकर स्वई भूषित किये॥ भुजङ्गप्रयात छंद॥ उहाँ रैनिचारों से लंकेश बोला। करौं बद्धरे धारिकै कीश लोला॥ उठो ओर चारी निशाचार धावो। करौहीन

मर्कट्ट सू मारि खावो॥ तपस्वीन दोऊ धरौ जाय जीतै। लयावो विभीषन्न ह्यां बाँधिभीतै॥ अंगद॥ बकै क्या वृथा मूढ़रे लाजछोरे। भयो है कहा सन्निपाताजु तोरे॥ कहै राम मानुष्य तैं ऐसिबानी। गिरैं क्योंन जिह्वा त्वयोरेभिमानी॥ गिरैंगी तुजिह्वा सही शंक नाहीं। परंतू सशीशौं के संग्राम माहीं॥ त्वया रक्कके राम नाराच प्यासे। तजौं आशतेही तुझै मूढ़ खासे॥ हुवै क्रोध ऐसो दसौआ-स्यतोरौं। त्वयालंक ऊपारि सामुद्र बोरौं॥

दो० गूलरफल सम लंक तव बसहु जंतु तुमबीच।
मैं बानर फल खात सोइ बार न लावत नीच॥
पै प्रभु आयसुहै नहीं करौं स्वई गम आज।
याको फल अल्पहि दिनन पावहिगो निरलाज॥
रामप्रताप बिचारि तब बालि तनै अति कोपि।
सुमिरि राम प्रण कै कठिन दीन सभा पदरोपि॥
सुनु रावण मम चरण जो सकसि आजु तैं टारि।
फिरहिं राम श्री जानकी जाउँ तोहिं मैं हारि॥

रावण बसुमतीछन्द॥ गहि पद पटको। महि कपि भटको॥ संयुताछन्द॥ घननाद आदिक बीरजे। बहु माखिगे कपि तीरते॥ पद धाय अंगदको धरैं। बहुभांति पौरुषसो करैं॥ तोटकछन्द॥ टसकै पग बालिकुमारक ना। फिरि बैठहिं आसन मारि मना॥ नहिं डोलत अंगदको पगयों। नर कामिनबैन सती मनज्यों॥ कबित्त॥ हाल्यो गिरि मेरु और हाल्यो गिरिअस्तशृंग हाल्यो उ-दयाद्रिशैल मंदर बिहाल्यो है। हाल्यो शिवशैल और सातहू पताल हाल्यो हाल्यो सब लोक सप्त सागर उछाल्यो है॥ हाल्यो अहिकच्छप बराहहू बिशेषिहाल्यो हाल्यो दशौ दिग्गज बिहायधीर चा-

ल्यो है। भाग्यवंत हाल्यो अति लंक दशकंठ हाल्यो बालिसुत बीर को न पगनेकु हाल्यो है ॥ सवैया ॥ बीरबड़े घननादसो भूरि सुभट्टन में जिनलीक जहां है। हारि उपाय गयेकरि कै बलकाहुन आयउ काम तहां है ॥ डोलत यों न मनो बिधना प्रथमै रचिभूतल संग रहा है। त्यों भगवन्त टरे पग क्यों कपि रामको आम प्रताप महाहै ॥ अंगद दोहा ॥

रे रावण जिन भुजनको बरणे बहुत प्रभाउ।
सो भुज रहे लुकाय क्यों आय न टारत पांउ ॥

तोटकछन्द ॥ तब आपहि कोपि उठ्यो बदहै। झटजाय गह्यो कपिको पदहै ॥ गहतै पद बालिकुमार कही। पटुतायुत बात समै जुचही ॥ अंगद सवैया ॥ मतिमंद बुझाय कह्यों हितमैं प्रथमैंनहिं कीन्ह्यसि कान स्वया। नहिं मानत बातनसों वहहै शठ लातनको नरनीच ज्वया ॥ अब आयसि आखिर कर्म्म वही खल डारेसि तैं सबलाजध्वया। भगवंतपरै किनरामके पाँवँपरेपदहौं न उबारत्वया॥

दो० सुनि अंगदके बचन इमि ह्वै लज्जित सुरआरि।
बैठ सिंहासन घूमिकै जनु सब संपति हारि ॥
तृणहि करत जो बज्रसम बज्रहि करितृण देत।
तासु दूत प्रण क्यों टरै समुझौ सुमति सचेत॥
अंगद रावण मान मथि कहि प्रभु कीरति गाथ।
भाग्यवन्त श्रीराम पद आय नवायो माथ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेअंगदरावणसंवादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० बन्दौं श्रीशंकर चरण कमल अमल भवपोत।
जिनकी कृपा कटाक्षते उदय ज्ञानरबि होत ॥